"अंकुर 2024"

(अंक 9)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति) नई दिल्ली-110002

अंकुर पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री सुशील कुमार जायसवाल

महानिदेशक लेखापरीक्षा

मुख्य संपादक

श्रीमती सौम्या परिहार

निदेशक (प्रशासन/राजभाषा)

संपादक-मंडल

श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

श्री संजीव

हिन्दी अधिकारी

श्रीमती शालिनी दहिया

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री डिम्पल प्रसाद

कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है।

संपादकीय मण्डल का रचनाओं से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शुभकामना संदेश	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक का संदेश	श्री सुशील कुमार जायसवाल, महानिदेशक लेखापरीक्षा	06
2.	शुभकामना संदेश	श्रीमती सौम्या परिहार, निदेशक	07
3.	शुभकामना संदेश	सुश्री ज्योति चौरासिया, निदेशक	08
4.	शुभकामना संदेश	श्री कृष्णा प्रताप सिंह, उपनिदेशक	09
5.	संपादकीय	श्री निलेश कुमार श्रीवास्तव, वरि.ले.प.अधिकारी/राजभाषा	10
6.	माननीय गृहमंत्री का संदेश		11
	रचना का नाम	लेखक का नाम	पृष्ठ सख्या
7.	चुनाव – 2024	कु. अनाया जोशी पुत्री श्री आदित्य जोशी, सहा. पर्यवेक्षक	12
8.	आसमान	श्रीमती विभा मण्डल (ग्वालियर शाखा कार्यालय)	13
9.	इन्द्र का अभिमान	श्रीमती मंजु, पत्नी श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.	14
10.	गोंड चित्रकला	मास्टर अभिषेक कु. आर्य, पुत्र श्री प्रमोद कु. आर्य, स.ले.प.अ.	15
11.	घोड़े की सवारी	श्रीमती मंजु, पत्नी श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.	16-20
12.	ध्यान के लाभ	श्री प्रशांत वशिष्ठ, स.ले.प.अ.	21-22
13.	नारी	श्री शिवम सिंह, लेखापरीक्षक (ग्वालियर शाखा कार्यालय)	23
14.	बालश्रम	मास्टर कल्प कु. आर्या पुत्र श्री प्रमोद कु. आर्या, स.ले.प.अ.	24
15.	बेटियाँ	श्रीमती विभा मण्डल (ग्वालियर शाखा)	25
16.	ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ (BSOD)	श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.	26-27
17.	भारत की भू-राजनीति में भूमिका	श्री प्रशांत वशिष्ठ, स.ले.प.अ.	28-29
18.	मानव विकास की अवस्थाएं	श्री धीरज कुमार तिवारी, व.ले.प.अ.	30-32
19.	शब्दों की पहचान	मास्टर प्रतीक गोयल, पुत्र श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.	33
20.	संयुक्त राष्ट्र	श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.	34-38
21.	समय का सदुपयोग- सफलता	श्री संदीप पाण्डेय, स.ले.प.अ.	39-41

	की गारंटी		
22.	सुव्यवस्थित घर और जीवन	श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.	42-43
23.	मेघालय (शिलांग व चेरापूंजी)	श्री हरीश चंद्र पाण्डेय, कल्याण सहायक	44-46
24.	अकेलेपन की तरफ बढ़ता समाज	श्री प्रशांत वशिष्ठ, स.ले.प.अ.	47-48
25.	संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2024 की कुछ झलकियां		48
26.	चित्र	सुश्री आयुषी साजवाण, पुत्री श्री अशोक कु. सजवाण, व.ले.प.अ.	50
27.	चित्र	मास्टर जय पुत्र श्री धीरज कुमार तिवारी, व.ले.प.अ.	
28.	चित्र	मास्टर आदिव कनीनवाल पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.	51
29.	चित्र	मास्टर आरव कनीनवाल पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.	
30.	चित्र	मास्टर आदिव कनीनवाल पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.	52
31.	चित्र	मास्टर आरव कनीनवाल पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.	
32.	चित्र	कु. भव्या नेगी, पुत्री श्रीमती कौशल्या, व.ले.प.	53
33.	चित्र	कु. भव्या नेगी, पुत्री श्रीमती कौशल्या, व.ले.प.	
34.	चित्र	सुश्री कुंजल, पौत्री श्री खुशहाल चंद, सहा. पर्यवेक्षक	54
35.	चित्र	सुश्री कुंजल, पौत्री श्री खुशहाल चंद, सहा. पर्यवेक्षक	
36.	चित्र	सुश्री कुंजल, पौत्री श्री खुशहाल चंद, सहा. पर्यवेक्षक	55
37.	चित्र	श्रीमती शालिनी दहिया, स.ले.प.अ.	
38.	चित्र	कुमारी लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	56
39.	चित्र	मास्टर प्रिंस, पुत्र श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.	
40.	चित्र	मास्टर प्रिंस, पुत्र श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.	57
41.	चित्र	कुमारी भाविका, पुत्री श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.	
42.	चित्र	कुमारी भाविका, पुत्री श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.	58
43.	चित्र	कुमारी आहाना झा, पुत्री श्री धर्मेन्द्र झा, लेखापरीक्षक	
44.	चित्र	कुमारी आहाना झा, पुत्री श्री धर्मेन्द्र झा, लेखापरीक्षक	59
45.	चित्र	कुमारी अमायरा झा, पुत्री श्री धर्मेन्द्र झा, लेखापरीक्षक	

46.	चित्र	श्रीमती सुभा भारती, पत्नी श्री संदीप कु. बरनवाल, लेखापरीक्षक	60
47.	चित्र	श्रीमती सुभा भारती, पत्नी श्री संदीप कु. बरनवाल, लेखापरीक्षक	
48.	चित्र	कुमारी कशिश, भतीजी श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	61
49.	चित्र	कुमारी कशिश, भतीजी श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	
50.	चित्र	कुमारी लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	62
51.	चित्र	कुमारी कशिश, भतीजी श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	
52.	पेड़ लगाओ	मास्टर आरव कनीनवाल पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.	63
53.	माँ का क़र्ज़...	श्री राजेश कुमार, व.ले.प.	64-65
54.	आँखों में आँसू आ गए पढ़ कर	श्री राजेश कुमार, व.ले.प.	66-68
55.	पति-पत्नी की नोक झोंक में प्रयुक्त सम्पूर्ण हिंदी...	श्री राजेश कुमार, व.ले.प.	69-70
56.	विज्ञान का चमत्कार	सुश्री लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	71
57.	विश्व शांति	सुश्री लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	72
58.	अभी तो छोटा बच्चा हूँ	सुश्री लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.	73
59.	महानगरी के लोग	श्रीमती शालिनी दहिया, स.ले.प.अ.	74
60.	छोड़ आए हो उन गलियों को	श्रीमती शालिनी दहिया, स.ले.प.अ.	75
61.	समाचार पत्र: ज्ञान का सशक्त साधन	श्रीमती सुभा भारती, पत्नी श्री संदीप कुमार बरनवाल, लेखापरीक्षक	76-77
62.	श्री हर्ष श्रीवास्तव, लेखापरीक्षक (टेबल टेनिस खिलाड़ी) की इस वर्ष की उपलब्धियां		78
63.	सेवनिवृत्तियां		79

शुभकामनाएँ

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "अंकुर" के नौवें अंक का विमोचन करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं, पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन की सार्थकता और सफलता की यात्रा का श्रेय पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों और विशेषकर रचनकारों को देते हुए उनके बहुमूल्य योगदान के लिए प्रशंसा करता हूँ। पत्रिका में समाहित पठनीय सामग्री, सूचनाप्रद एवं उपयोगी है।

आशा है कि यह पत्रिका कार्यालय के कर्मियों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहित करेगी और रचनाकारों की अभिव्यक्ति को सार्थक मंच प्रदान करती रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

सुशील कुमार जायसवाल
महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय प्राप्ति)
नई दिल्ली

संदेश

हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' का नवम अंक प्रकाशित हुआ है, यह अत्यंत हर्ष का विषय है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका अधिकारियों/ कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति रुझान पैदा करने के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य कर रही है।

अधिकारियों/ कर्मचारियों द्वारा रचित लेख, कहानियाँ, यात्रा वृत्तांत एवं कविताएं आदि कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते हैं। यह हिंदी के प्रति कार्मिकों की रुचि तथा राजभाषा के प्रचार के लिए एक सफलतम प्रयास है।

मैं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति की कामना करते हुए सभी रचनाकारों तथा संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ ।

सौम्या परिहार
निदेशक/ राजभाषा

संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 9वें अंक के प्रकाशन की आप सभी को बहुत बधाई।

यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के हिंदी प्रेम एवं रुचि का प्रतीत है। पत्रिका की रचनाएं इस तथ्य का प्रमाण है कि कार्यालय में अनेक सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभाएं है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका एक सतत प्रयास के रूप में कार्य कर रही है।

कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देती यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार के लिए एक सफलतम प्रयास भी है।

मैं पत्रिका की प्रगति की सफलता व उन्नति की कामना करते हुए सभी रचनकारों तथा संपादक मण्डल को धन्यवाद देती हूँ।

ज्योति चौरसिया
निदेशक
जी.एस.टी./क्षे.क्ष.नि.एवं ज्ञा.के.

शुभकामनाएँ

सर्वप्रथम कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका “अंकुर” के नौवें अंक के प्रकाशन पर बहुत सारी शुभकामनाएं। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों, लेखकों तथा सम्पादन सहयोगियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय के कार्मिक ‘अंकुर’ पत्रिका के माध्यम से हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रहें है।

हिंदी राष्ट्र की राजभाषा है, अतः हिंदी के उत्तरोत्तर विकास के लिए प्रयास करना हम सभी का नैतिक दायित्व है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा हिंदी की सेवा करके अपने दायित्व का निर्वहन करती रहेगी।

आशा है कि यह पत्रिका ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ कार्यालय के कार्य-कलापों से भी सुसज्जित होगी।

पत्रिका की प्रगति, सफलता एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

कृष्ण प्रताप सिंह
उप-निदेशक (आयकर)

संपादक की कलम से.....................

प्रिय पाठकों.........................

राजभाषा हिंदी की सेवा एवं उसके प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित इस कार्यालय की पत्रिका "अंकुर" के नौवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। वास्तव में यह पत्रिका कार्यालय महालेखापरीक्षा (केन्द्रीय प्राप्ति) नई दिल्ली में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों के सक्रिय रचनात्मक सहयोग का ही प्रतिफल है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें कविताएँ, कहानियाँ, स्वास्थ्यवर्धक लेख व चित्र तथा वर्तमान के ज्वलंत विषयों के लेखों की बहुलता हैं, जो विशेषतौर पर पाठकों को पढ़ने के लिए उनका ध्यान आकर्षित करते हैं। "अंकुर" का यह आकर्षक अंक राजभाषा हिंदी के विकास में इस कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जोड़ कर रखता है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे विभागीय पत्रिका के सराहनीय एवं अभूतपूर्व योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। अतः "अंकुर" के सभी रचनाकारों, सुधि पाठकों एवं उच्चाधिकारियों को मैं उनके सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

भाषा ही आपसी विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। यह जितनी सरल और सुबोध होगी संप्रेषण उतना ही सफल और सशक्त होगा। राजभाषा के निरंतर बढ़ते कदम इस बात के साक्ष्य हैं कि वह दिन अब दूर नहीं जब हम सभी चिन्तन, मनन व संप्रेषण का कार्य अपनी मातृभाषा में करके गौरवान्वित महसूस करेंगें।

हम अपने सभी पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि "अंकुर" पत्रिका का यह नौवाँ अंक भी हमेशा की भांति आपकी आकांक्षाओं एवं अभिलाषाओं पर खरा उतरेगा। इसकी रचनाएँ न केवल रोचक, ओजपूर्ण हैं अपितु ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद भी हैं।

अंत में "अंकुर" के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं इसके विविध कार्यो से जुडे सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का मैं विशेष आभार व्यक्त करता हूँ तथा पाठकों से विनम्र अनुरोध करता हूँ कि आप अपने बहुमूल्य सुझावों एवं विचारों से हमारा मार्गदर्शन करें ताकि भविष्य में भी पत्रिका में और नवीन आयामों को जोड़कर इसे और श्रेष्ठ बनाने हेतु प्रयासरत रहें।

राजभाषा हिंदी की प्रगति एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित!

निलेश कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा
(संपादक)

हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृहमंत्री का संदेश

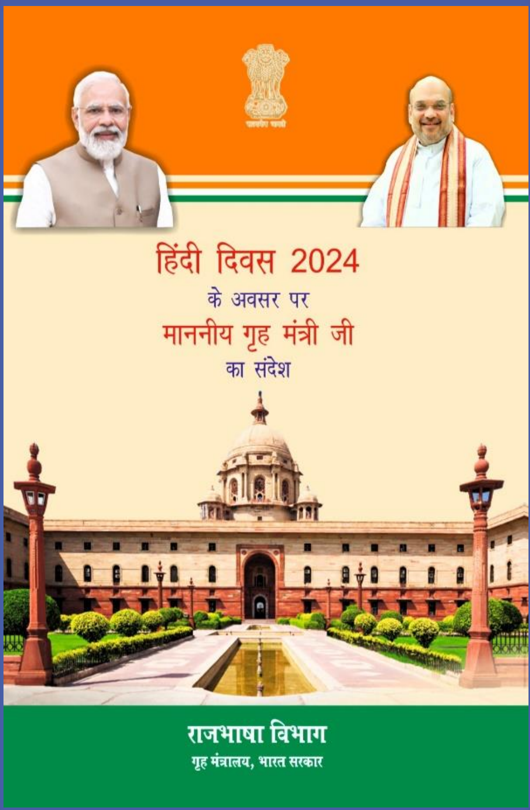

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

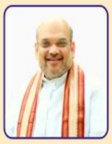

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

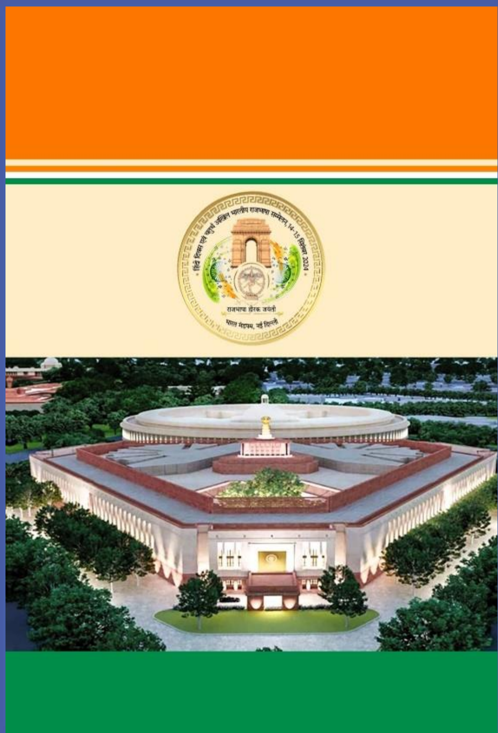

चुनाव 2024

अनाया जोशी,
पुत्री श्री आदित्य जोशी, सहा.पर्य.

वर्ष 2024 शुरू होते ही पूरे भारत में माहौल चुनावमय हो गया, कारण स्पष्ट है। मई के महीने में मौसमी गर्मी के साथ चुनावी गर्मी भी अपनी चरम सीमा पर होगी। सभी नेता और राजनीतिक दल मतदाताओं से मतदान के अधिकार के प्रयोग की पुरजोर अपील करेंगें और लोकतन्त्र के सबसे बड़े उत्सव पर हम सब बढ़ चढ़कर भाग लेंगें। जब हम सब जागरूक मतदाता मतदान केंद्र से आते हैं तो एक उंगली पर अमिट स्याही (indelible ink) का निशान लगवा लाते है, क्यों भला?

हमारे देश में साल 1951-52 में जब पहली बार चुनाव हुए थे तब ऐसा देखने में आया कि कई लोगों ने किसी अन्य व्यक्ति के स्थान पर मत दे दिया था और कुछ ने तो एक से अधिक बार भी मतदान के अधिकार का प्रयोग कर पूरी प्रक्रिया की छवि को खराब कर दिया था। इस तरह की शिकायतों के समाधान हेतु कई विकल्पों पर विचार करने के बाद चुनाव आयोग ने सोचा कि मतदाता की उंगली पर एक निशान बनाया जाए जिससे यह पता लग सके कि वो वोट दे चुका है। अब खोज शुरू हुई अमिट स्याही की। इसके लिए नेशनल फ़िज़िकल लैबोरेटरी ऑफ इंडिया (NPL) को चुनाव आयोग ने संपर्क किया और ऐसी स्याही को तैयार किया गया जिसे न तो पानी से धोया जा सकता था और न ही किसी अन्य रासायनिक पदार्थ से हटाया जा सकता था।

साल 1962 में हुए चुनावों में पहली बार इस अमिट स्याही का प्रयोग हुआ और तब से लगातार भारत में होने वाले हर चुनाव में इस स्याही का इस्तेमाल होता है। अब तो हालत यह है कि न सिर्फ भारत बल्कि विश्व के बहुत से देशों में हमारे देश में बनी इस स्याही का प्रयोग होता है और चुनाव बहुत सुगम, सरल तरीके से सम्पन्न होते हैं।

आसमान

श्रीमती विभा मण्डल
(ग्वालियर शाखा कार्यालय)

ये आसमान भी अपनी अलग दास्तान सुनाता है,
चंदा पर शर्माता है और सूरज पर इठलाता है।
सितारों की तो बात ही निराली है,
मानो घर घर दिवाली है।
चाँद और सूरज कहाँ साथ रहते है,
एक रात में तो एक दिन में नज़र आते है।
रात को जब सो जाते है सब लोग,
चाँद सितारे फुसफुसाते है आपस में वे लोग।
आसमान का तो अंदाज़ निराला है,
सारे ब्रह्मांड को इसी ने संभाला है।
सर्दी की रातो में जब छुप जाता है आसमान,
घने कोहरों की बनाकर चादर तान,
जगत को उजाला करने वाला,
खो देता है अपना अभिमान।
ग्रहण के दिन ये अनूठा मेल मिलता है,
चाँद सूरज लुका छुपी का खेल खेलते हैं।
सितारे तो रोज़ निकलते हैं,
कभी पास तो कभी दूर मिलते हैं,
यूं तो ये रोज़ सबेरे ढलते हैं,
पर हर दिन हमारी किस्मत बदलते हैं।

इन्द्र का अभिमान

श्रीमती मंजु,
पत्नी श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.

बृजवासी जब करते थे, इन्द्र देव की पूजा।
इन्द्र देव फिर सोचे ऐसे, जैसे कोई अजूबा।।

अहंकारी था वह इतना, जितना नहीं कोई दूजा।
कृष्ण पूछे, क्यों करते हम इन्द्र देव की पूजा।।

माता बोली, इन्द्र देव बरसाते जल की धारा।
उपजे जिससे अन्न, गाय को मिल जाए चारा।।

कृष्ण पूछे, क्यों करते हम इन्द्र देव की पूजा।
जिसकी पूजा न करो, तो करदे धरा को सूखा।।

इससे बढ़िया कर लें हम गोवर्धन की पूजा।
बृजवासियों का भी स्वर कृष्ण जी के संग गूँजा।।

हो अपमानित इन्द्र देव फिर लोगों पर है गरजा।
चारों दिशा में कर दी फिर मूसलाधार वर्षा।।

कृष्ण देव ने धारण कर लिया रूप ऐसा विराट।
कन्नी उँगली पर उठा लिया पूरा गोवर्धन सपाट।।

इन्द्र देव के यह सब देख सीने में लग गई आग।
सात दिन तक बरसे, जैसे फुँकारे कालिया नाग।।

देख कृष्ण देव की महिमा इन्द्र देव चकराये।
ब्रह्म देव से जाके फिर इन्द्र देव मिल आए।।

ब्रह्म देव बोले इन्द्र से, मत करो इतना गुमान।
नहीं सामना समुन्द्र से नदी का आसान।।

इन्द्र देव जाने जब ये तो है नारायण भगवान।
गलती अपनी मानी, टूटा उनका अभिमान।।

गोंड चित्रकला

मास्टर अभिषेक कुमार आर्य,
सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.

गोंड चित्रकला लोक-कला का ही एक रूप है। जो गोंड समाज की उपशाखा परधान समुदायों के कलाकारों द्वारा चित्रित की जाती है। जिसमें गोंड समुदायों के पारंपरिक गीत और कहानियों का चित्रण किया जाता है, जो परंपरागत रूप से परधान समुदायों के द्वारा गोंड देवी देवताओं के लिये सदियों से गायी जाती रही है।

प्राय: परधान लोग राजगोंड राजपरिवारों के यहाँ कथा गायन करने जाया करते थे और अपनी जीविका चलाते थे। जब कलाकारों द्वारा कथा गायन की परंपरा कम होती चली गई तो गोंड समाज के लोग कथा गायन को चित्रकला के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने लगे। गोंड शब्द द्रविड शब्द “कोंड” से आया है जिसका अर्थ “हरा पहाड़” बताया गया है। गोंड चित्रकला मुख्य रूप से मध्य प्रदेश में की जाती रही है, पर यह आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र छत्तीसगढ़ और ऑडिशा में भी काफी प्रचलित है।

गोंड समाज के अनुसार पहाड़, नदी, चट्टान, पेड़–पौधे, आदि जो प्रकृति से जुड़ा है उसे वो पवित्र मानते है। इसलिये गोंड प्रजाति के लोग इन्हें सम्मान और श्रद्धा के रूप में चित्रित करते है। गोंड चित्र मनुष्य के अपने प्राकृतिक परिवेश के साथ घनिष्ठ संबंध का प्रतिबिम्ब दर्शाता है।

गोंड चित्रकला का आकर्षक पहलु यह भी है कि इसमें प्रयोग होने वाले रंग सभी प्राकृतिक वस्तुओं से बनाए जाते है, इस कला में मुख्यत: सफेद, लाल, नीला, और पीला है जो आमतौर पर रंगीन मिट्टी, पौधों की पत्तियों और कई प्रकार के फूलों से लिये जाते हैं।

वर्तमान युग में प्राकृतिक रंगों की कमी और बदती मांगों की वजह से अब गोंड कला में पोस्टर रंगों का प्रयोग शुरू कर दिया है।

घोड़े की सवारी

श्रीमती मंजु,
पत्नी श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.

बहुत समय पहले की बात है जब मैं नौ साल का था। हम एक छोटे शहर मे रहते थे। हम अपना गाँव छोड़कर शहर आ गए थे। मेरा चचेरा भाई बॉब, जिसे मेरे अलावा उसके जानने वाले सभी लोग पागल समझते थे, वह सुबह चार बजे घर आया और मुझे मेरे कमरे की खिड़की पर थपथपाकर जगाया।

उसने आवाज लगाई, चार्ल्स-चार्ल्स। मैं बिस्तर से उठा और खिड़की से बाहर देखा। मैंने जो देखा उस पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। अभी सुबह नहीं हुई थी, लेकिन गर्मी का मौसम था और इतना उजाला यह जानने के लिए पर्याप्त था कि मैं सपना नहीं देख रहा था। मेरा चचेरा भाई बॉब एक सुंदर सफेद घोड़े पर बैठा था। मैंने अपना सिर खिड़की से बाहर निकाला और अपनी आँखें मलीं। मेरे चचेरे भाई ने कहा- यह एक असली घोड़ा है तुम सपना नहीं देख रहे हो। यदि तुम सवारी करना चाहते हों तो जल्दी करों। मैं जानता था कि मेरा चचेरा भाई बॉब जीवन को अच्छे ढंग से जीने का शौक रखता है लेकिन यह मेरे विश्वास से भी अधिक था।

मेरी पहली इच्छा भी घोड़े पर सवारी करने की थी। पर, हम गरीब थे। यह वह कारण था जो मुझे उस पर विश्वास करने की अनुमति नहीं दे रहा था जो मैंने देखा। हमारे पास पैसे नहीं थे। हमारी पूरी बिरादरी गरीबी से त्रस्त थी। हमारी बिरादरी का प्रत्येक परिवार दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक और हास्यास्पद गरीबी में जी रहा था। कोई भी यह नहीं मान सकता था कि यहाँ हमें कभी इतना पैसा मिला हो कि हम भर पेट खा सकें, यहां तक कि परिवार के बूढे भी नहीं। हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध है। हम ग्यारह सदियों से जब हम दुनिया के सबसे धनी परिवार थे तब भी अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थे। हम पहले गौरवान्वित थे, उसके बाद ईमानदार, और उसके बाद हम सही और गलत में विश्वास करते थे। हममें से कोई भी किसी का फायदा नहीं उठाता था, चोरी करना तो दूर की बात है। हालांकि, भले ही मैं घोड़े को देख सकता था, इतना शानदार; हालाँकि मैं इसकी गंध महसूस कर सकता था, बहुत प्यारी; मैं इसे साँस लेते हुए सुन सकता था, बहुत रोमांचक; पर मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि घोड़े का मेरे चचेरे भाई बॉब से या मेरे साथ या हमारे परिवार के किसी भी अन्य सदस्य के साथ, सोते या जागते, कोई लेना-देना है, क्योंकि मैं जानता था कि मेरा चचेरा भाई बॉब घोड़ा नहीं खरीद

सकता था, और यदि वह इसे खरीद नहीं सकता था तो उसने इसे चुरा लिया होगा, परंतु मेरे मन ने यह मानने से इनकार कर दिया कि उसने इसे चुराया है। हमारी बिरादरी का कोई भी सदस्य चोर नहीं हो सकता था। मैंने पहले अपने चचेरे भाई को देखा और फिर घोड़े को।

दोनों को देखकर एक पवित्र शांति और सुख का एहसास हुआ, जिसने एक ओर तो मुझे प्रसन्न किया और दूसरी ओर भयभीत। बॉब, मैंने कहा, तुमने यह घोड़ा कहाँ से चुराया? उसने कहा, अगर तुम सवारी करना चाहते हो तो खिड़की से बाहर छलांग लगाओ। अब यह सच लग रहा था कि उसने जरूर घोड़ा चुरा लिया होगा। वह मुझे यह निमंत्रण देने आया था कि मैं सवारी करूँ या न करूँ, और मैंने सवारी करने का चुना। मुझे ऐसा लगा कि सवारी के लिए घोड़ा चुराना, पैसे जैसी किसी और चीज़ को चुराने के समान नहीं है। मैं जितना जानता था, शायद यह चोरी तो बिल्कुल नहीं थी। यदि कोई मेरे चचेरे भाई बॉब और मेरी तरह घोड़ों का दीवाना होता तो इसको चोरी नहीं मानता। जब तक हम घोड़े को बेचने की नहीं सोचते, तब तक यह चोरी नहीं होगी, बेशक, मुझे पता था कि हम ऐसा कभी नहीं करेंगे। मैंने कहा, मुझे कपड़े बदलने दो। ठीक है, उसने कहा, लेकिन जल्दी करो। मैं लपक कर अपने कपड़े पहनने लगा। मैं खिड़की से नीचे आँगन में कूद गया और अपने चचेरे भाई बॉब के पीछे घोड़े पर बैठ गया।

उस समय हम एक छोटे से शहर के कोने में रहते थे। हमारे घर के पीछे गाँव था। उसमे अंगूर के बाग, बगीचे, छोटी खाईयां और गाँव की सड़कें। तीन मिनट से भी कम समय में हम मुख्य सड़क पर थे और फिर घोड़ा दौड़ने लगा। हवा बहुत ही सुखद और साफ लग रही थी। घोड़े के दौड़ने का अनुभव अद्भुत था।

मेरा चचेरा भाई बॉब, जो हमारे परिवार के सबसे पागल सदस्यों में से एक माना जाता था, ने गाना शुरू किया। मेरा मतलब है कि वह दहाड़ने लगा। हर परिवार में कहीं न कहीं एक पागल प्रवृत्ति का होता है, और मेरे चचेरे भाई बॉब को हमारी बिरादरी में पागल प्रवृत्ति का स्वाभाविक वंशज माना जाता था। उससे पहले हमारे चाचा पीटर थे, जो कि काले बालों वाले, शक्तिशाली सिर वाले और गाँव के सबसे बड़ी मूंछों वाले एक विशाल व्यक्ति थे। एक ऐसा व्यक्ति जो गुस्से में इतना उग्र, इतना चिड़चिड़ा, इतना अधीर था कि वह दहाड़ कर किसी को भी बात करने से रोक देता था। एक बार उनका अपना बेटा एंडी ब्लॉक दौड़कर नाई की दुकान पर गया था, जहां उसके पिता अपनी मूंछें कटवा रहे थे और उन्हें बताया कि उनके घर में आग लग गई है। पर यह आदमी पीटर कुर्सी पर बैठ गया और दहाड़कर नाई से बोला, कोई बात नहीं, इस पर ध्यान मत दो। नाई ने कहा, लेकिन लड़का कहता है कि तुम्हारे घर में आग लग गई है। तो पीटर ने दहाड़ते हुए कहा, इस पर ध्यान मत दो। मेरे चचेरे भाई बॉब को इस व्यक्ति का स्वाभाविक वंशज माना जाता था, हालाँकि बॉब के पिता एंथनी थे, जो व्यावहारिक थे। हमारी बिरादरी में ऐसा ही था। एक आदमी अपने बेटे के शरीर का पिता हो सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह उसकी आत्मा का भी पिता हो।

हम घोड़े पर सवार हुए और मेरे चचेरे भाई बॉब ने गाना गाया। हमने घोड़े को तब तक दौड़ने दिया जब तक उसे दौड़ने का मन हुआ। आख़िरकार मेरे चचेरे भाई बॉब ने कहा, नीचे उतरो। मैं अब अकेले यात्रा करना चाहता हूँ। परंतु मैंने कहा क्या तुम मुझे अकेले यात्रा करने दोंगे?

मेरे चचेरे भाई ने कहा, मुझे घोड़ों को संभालने का ढंग है। मैंने भी कहा, जैसे तुम्हारे पास घोड़े को संभालने का ढंग है वैसे ही मेरे पास भी है। मेरे भाई ने मुझे नीचे उतार दिया। मैंने कहा, लेकिन याद रखों कि तुम्हें मुझे अकेले सवारी करने का प्रयास करने देना होगा। मैं नीचे उतरा और मेरे चचेरे भाई बॉब ने घोड़े पर लात मारी और चिल्लाया, भागो। घोड़ा अपने पिछले पैरों पर खड़ा था, हिनहिना रहा था और तेज गति से भाग खड़ा हुआ। मेरा चचेरा भाई बॉब घोड़े को सूखी घास के मैदान से होते हुए एक खाई तक ले गया, खाई को पार किया और पांच मिनट बाद भीगते हुए वापस लौटा। सूरज निकाल चुका था, अब सवारी करने की बारी मेरी थी। मेरा चचेरा भाई बॉब घोड़े से उतर गया। मैं घोड़े की पीठ पर चढ़ गया और एक पल के लिए मुझे सबसे भयानक डर का एहसास हुआ जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन घोड़ा नहीं हिला। उसकी मांसपेशियों पर लात मारो, मेरे चचेरे भाई बॉब ने कहा। तुम किस बात का इंतजार कर रहे हो? सबके उठने से पहले हमें उसे वापस ले जाना होगा। मैंने घोड़े की मांसपेशियों पर लात मारी। एक बार फिर वह पीछे हट गया और हिनहिनाने लगा। फिर वह भागने लगा। मुझे नहीं पता था कि क्या करना है। घोड़ा खेत के पार खाई की ओर दौड़ने के बजाय सड़क से नीचे अंगूर के बगीचे की ओर भागा, जहां उसने लताओं पर छलांग लगाना शुरू कर दिया। मेरे गिरने से पहले घोड़े ने अनेकों लताओं को पार किया। फिर वह चलता रहा।

मेरा चचेरा भाई बॉब सड़क पर दौड़ता हुआ आया। वह चिल्लाया, मुझे तुम्हारी चिंता नहीं है। पर हमें वह घोड़ा प्राप्त करना होगा। तुम इस तरफ जाओ और मैं इस तरफ जाऊंगा। यदि तुम्हें घोड़ा मिले तो होशियार रहना। मैं पास में ही रहूँगा। मैं सड़क पर चलता रहा और मेरा चचेरा भाई, बॉब खेत के पार खाई की ओर चला गया। घोड़े को ढूँढने और उसे वापस लाने में उसे आधा घंटा लग गया।

उसने कहा आओ बैठो। मैंने पूछा, अब सारी दुनिया जाग चुकी है, हम क्या करेंगे? उसने कहा, हम या तो उसे वापस ले जाएंगे या कल सुबह तक छिपा देंगे। वह चिंतित नहीं लग रहा था और मुझे पता था कि वह उसे छिपा देगा और वापस नहीं ले जाएगा, किसी भी कीमत पर नहीं। मैंने कहा, हम उसे कहां छिपाएंगे? उसने कहा, मैं एक जगह जानता हूं। मैंने अपने भाई से पूछा कि तुमने यह घोड़ा कितने समय पहले चुराया था? उसने कहा कि वह कुछ समय से सुबह-सुबह इन यात्राओं पर जा रहा था और आज सुबह मेरे लिए ही आया था क्योंकि वह जानता था कि मैं घुड़सवारी करने का कितना शौक रखता था। उसने पूछा कि घोड़ा चुराने की बात तुमने कहीं से सुनी है क्या? मैंने कहा छोड़ो, यह बताओ तुमने हर सुबह घुड़सवारी करना कितने समय पहले शुरू किया? उसने कहा, आज सुबह तक नहीं। मैंने कहा,

तुम सच बोल रहे हो? उसने कहा, बिल्कुल नहीं, लेकिन अगर मैंने सच बोला, तब भी तुम्हें यही कहना है। मैं नहीं चाहता कि हम दोनों झूठे बने। हम दोनों जानते हैं कि हमने आज सुबह से ही सवारी शुरू की। ठीक है, मैंने कहा। वह चुपचाप घोड़े को लेकर एक वीरान अंगूर के बगीचे के पीछे खेत की ओर चला गया। खेत में कुछ जई और सूखी घास थी। हम घर वापिस जाने लगे।

उसने कहा, घोड़े को इस तरह काबू में करना आसान नहीं था। पहले तो वह बेतहाशा भागना चाहता था, लेकिन, जैसा कि मैंने तुम्हें बताया था कि मुझे घोड़े संभालने का ढंग है। मैं उसे वह सब कुछ करने के लिए प्रेरित कर सकता हूँ जो मैं चाहता हूँ। घोड़े मुझे समझते हैं। मैंने पूछा, तुम ऐसा कैसे करते हो? उसने कहा, मेरा घोड़े के साथ एक समझौता है। हाँ, लेकिन किस प्रकार का समझौता? उसने कहा, एक सरल और ईमानदार। ठीक है, काश मुझे पता होता कि घोड़े के साथ ऐसी समझ कैसे बनाई जाए। तुम अभी भी छोटे लड़के हो, उसने कहा। जब तुम पंद्रह वर्ष के हो जाओंगे तो तुमको पता चल जाएगा कि यह कैसे करना है। मैं घर गया और भरपेट नाश्ता किया।

उस दोपहर मेरे चाचा पीटर कॉफी और सिगरेट के लिए हमारे घर आए। वह बैठक में बैठे, चुस्की और धूम्रपान कर रहे थे और पुराने समय को याद कर रहे थे। तभी एक आगंतुक आया, जॉन नाम का एक किसान। मेरी माँ आगंतुक के लिए कॉफ़ी और तम्बाकू लेकर आई और उसने एक सिगरेट पी और घूंट भरते हुए धूम्रपान किया और फिर अंत में, उदासी भरी आह भरते हुए उसने कहा, मेरा सफेद घोड़ा जो पिछले महीने चोरी हो गया था, वह अभी भी नहीं मिला है। मेरे चाचा पीटर बहुत चिढ गए और चिल्लाए, इसमें क्या बड़ी बात है। घोड़े खोना क्या नुकसान होता है? क्या हम सबने अपनी मातृभूमि नहीं खोई है? यह घोड़े के लिए क्यों रो रहा है? जॉन ने कहा, आपके लिए, यह कहना आसान हो सकता है, लेकिन मेरे लिए नहीं? घोड़े के बिना मैं क्या करूंगा? जाओ यहाँ से, मेरे चाचा पीटर दहाड़ उठे। जॉन ने कहा, मैं यहां पहुंचने के लिए दस मील पैदल चला। किसने कहा था, मेरे चाचा पीटर चिल्लाए। मेरे बाएं पैर में दर्द है, किसान ने कहा। मैं क्या करूँ, मेरे चाचा पीटर दहाड़ उठे। किसान ने कहा, यह घोड़ा मुझे बहुत महंगा पड़ा था। मेरे चाचा पीटर ने कहा, मैं पैसे पर थूकता हूं। वे उठे और दरवाज़ा बंद करके घर से बाहर चले गए। मेरी माँ ने किसान को समझाया कि उनका हृदय कोमल है। बात बस इतनी है कि उसे घर की याद आती है पर इंसान अच्छा है। किसान चला गया और मैं अपने चचेरे भाई बॉब के घर भाग गया।

वह एक आड़ू के पेड़ के नीचे बैठा था, एक कबूतर के घायल पंख की मरम्मत करने की कोशिश कर रहा था जो उड़ नहीं सकता था। वह पक्षी से बात कर रहा था। मैंने कहा, किसान जॉन, हमारे घर आया था। वह अपना घोड़ा ढूंढ रहा है। तुम्हारे पास यह एक महीना है। मैं चाहता हूं कि तुम वादा करो कि जब तक मैं घुड़सवारी न सीख लूं, इसे वापस नहीं करोगे। मेरे चचेरे भाई बॉब ने कहा, तुम्हें घुड़सवारी सीखने में एक साल लगेगा। मैंने कहा, हम घोड़े को एक साल तक रख सकते हैं। मेरा चचेरा भाई बॉब अपने पैरों पर खड़ा हो

गया। क्या? वह दहाड़ा। क्या तुम मुझे चोरी करने के लिए आमंत्रित कर रहे हो? घोड़े को उसके असली मालिक के पास वापस जाना होगा। मैंने कहा, कब तक? उसने कहा, ज्यादा से ज्यादा छह महीने तक। उसने पक्षी को हवा में उछाल दिया। पक्षी ने बहुत कोशिश की, लगभग दो बार गिरा, लेकिन आख़िरकार उड़ गया। दो सप्ताह तक हर सुबह जल्दी, मेरे चचेरे भाई बॉब और मैंने घोड़े को उस सुनसान अंगूर के बगीचे के पीछे के खेत से बाहर निकाला, जहाँ हम उसे छिपा रहे थे और उस पर सवार होते थे। हर सुबह, जब अकेले सवारी करने की मेरी बारी होती थी, घोड़ा अंगूर की लताओं पर छलांग लगाता था और मुझे फेंक कर भाग जाता। फिर भी, मुझे आशा थी कि समय आने पर मैं अपने चचेरे भाई बॉब की तरह सवारी करना सीख लूँगा।

एक सुबह सुनसान अंगूर के बगीचे के रास्ते में हमारी मुलाकात किसान जॉन से हुई जो शहर जा रहा था। मुझे बात करने दो, मेरे चचेरे भाई बॉब ने कहा। मैं किसानों से बात करना जानता हूँ। सुप्रभात, जॉन, मेरे चचेरे भाई बॉब ने किसान से कहा। किसान ने उत्सुकता से घोड़े का अध्ययन किया। सुप्रभात, बेटों। आपके घोड़े का नाम क्या है? प्रिंस, मेरे चचेरे भाई बॉब ने कहा। जॉन ने कहा, एक प्यारे घोड़े के लिए एक प्यारा नाम। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह वही घोड़ा है जो कई सप्ताह पहले मेरे यहाँ से चुराया गया था। क्या मैं उसके मुँह में देख सकता हूँ? बेशक, बॉब ने कहा। किसान ने घोड़े के मुँह में देखा। उसने कहा, बिल्कुल वही दांत है। यदि मैं आपके माता-पिता को नहीं जानता होता तो मैं दावे के साथ कहता कि यह मेरा घोड़ा है। ईमानदारी के लिए आपके परिवार की प्रसिद्धि मुझे अच्छी तरह मालूम है। यह घोड़ा मुझे बिल्कुल अपने घोड़े का जुड़वां लगता है। एक संदिग्ध व्यक्ति अपने दिल की बजाय अपनी आँखों पर विश्वास करेगा। यह बोलकर वह चला गया। अगली सुबह हम घोड़े को जॉन के अंगूर के बगीचे में ले गए और उसे वहाँ छोड़ दिया। मेरे चचेरे भाई बॉब ने घोड़े के चारों ओर अपनी बाहें डाल दीं, अपनी नाक घोड़े की नाक से लगाई, उसे थपथपाया और फिर हम चल दिए।

उस दोपहर जॉन हमारे घर आया और मेरी माँ को वह घोड़ा दिखाया जो चोरी हो गया था और अब मिल चुका था। उसने कहा, घोड़ा पहले से कहीं ज्यादा ताकतवर लग रहा है और स्वभाव भी बदल चुका है। मैं भगवान को धन्यवाद देता हूं। मेरे चाचा पीटर, जो बैठक में थे, चिढ़ गए और चिल्लाए, चुप हो जाओ। तुम्हारा घोड़ा तुम्हें वापस मिल गया है। अब फालतू बात मत करो। जॉन मुझे लगातार देख रहा था। पर कुछ बोला नहीं। अगली सुबह हम जॉन के पास गए और उससे घुड़सवारी करने की बात की। जॉन मान गया और हम रोज घुड़सवारी करने लगे और इस तरह घोड़ा चोरी होने की बात एक राज़ ही रह गई।

ध्यान के लाभ

श्री प्रशांत वशिष्ठ, स.ले.प.अ.

ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मन को केंद्रित किया जाता है और मानसिक स्पष्टता और विश्राम की स्थिति प्राप्त की जाती है। यह हजारों वर्षों से विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों में किया जाता रहा है, और इसके लाभ विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं।

यहाँ ध्यान के बारे में कुछ प्रमुख बिंदु हैं:

ध्यान के प्रकार:

1. माइंडफुलनेस ध्यान: वर्तमान क्षण में पूरी तरह से संलग्न रहने पर केंद्रित होता है। इसमें विचारों और संवेदनाओं को बिना किसी निर्णय के देखना शामिल है।
2. लविंग-काइंडनेस ध्यान (मेटा): स्वयं और दूसरों के प्रति सहानुभूति और प्रेम विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
3. ट्रांसेंडेंटल ध्यान: एक विशेष मंत्र को मौन में दोहराने का उपयोग करके गहरी विश्राम और जागरूकता की स्थिति प्राप्त करता है।
4. ज़ेन ध्यान (ज़ाज़ेन): एक विशेष मुद्रा में बैठने और श्वास पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर देता है ताकि माइंडफुलनेस और अंतर्दृष्टि को बढ़ावा दिया जा सके।

लाभ:

1. मानसिक स्वास्थ्य: तनाव, चिंता, और अवसाद को कम करता है। यह भावनात्मक भलाई और सहनशीलता को भी बढ़ाता है।
2. शारीरिक स्वास्थ्य: रक्तचाप को कम कर सकता है, नींद में सुधार कर सकता है, और प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ कर सकता है।
3. संज्ञानात्मक कार्यक्षमता: ध्यान केंद्रित करने, स्मृति, और निर्णय लेने जैसी कार्यात्मक क्षमताओं में सुधार कर सकता है।
4. आत्म-जागरूकता: स्वयं की समझ बढ़ाता है, जिससे नकारात्मक पैटर्न और व्यवहार को पहचानने और बदलने में मदद मिलती है।

अभ्यास:

1. स्थान: एक शांत और आरामदायक जगह चुनें जहां आपको बाधित न किया जाए।
2. अवधि: छोटी सत्रों (5-10 मिनट) से शुरुआत करें और जैसे-जैसे आप सहज होते जाएं, अवधि बढ़ाएं।

3. तकनीक: एक विशेष वस्तु, विचार, या श्वास पर ध्यान केंद्रित करें। जब ध्यान भंग होता है, तो धीरे-धीरे अपने ध्यान को वापस केंद्रित करें।

चुनौतियाँ:

1. अस्थिरता: अस्थिरता या विचलित होने का अनुभव करना सामान्य है। इन भावनाओं को स्वीकार करना और ध्यान को वापस केंद्रित करना महत्वपूर्ण है।
2. नियमिता: नियमित अभ्यास महत्वपूर्ण है। ध्यान को रोज़ एक ही समय पर करने की कोशिश करें ताकि यह आदत बन जाए।
3. अपेक्षाएँ: तात्कालिक परिणामों की उम्मीद न करें। ध्यान एक कौशल है जो समय के साथ लगातार अभ्यास से विकसित होता है।

ध्यान एक व्यक्तिगत यात्रा है, और विभिन्न तकनीकें अलग-अलग व्यक्तियों के लिए बेहतर काम कर सकती हैं। विभिन्न रूपों की खोज करना आपको यह पहचानने में मदद कर सकता है कि आपके लिए सबसे उपयुक्त क्या है।

नारी

श्री शिवम सिंह,
लेखापरीक्षक (ग्वालियर शाखा कार्यालय)

वह गुप-चुप होकर सहती सब, अपने दुःख किससे कहती कब।
अंतर्मन में बातें बुनती, बस खुद से ही पूछा करती।
है युगों से दुःख का नाता जो, क्यों तेरे हिस्से आता वो।
माँ सीता जो आश्रम को गयीं, थी सभा बीच द्रौपदी खड़ी।
है सतियों की चीत्कार यहाँ, है जौहर का इतिहास पढ़ा।
दो कुलों की जो मर्यादा है, उसने तेरा पग बाँधा है।
निर्भया है डरती सड़कों पर, है शाम की सीमा उसके घर।
तू न्याय की देवी कहलायी, पर न्याय ना खुद पर कर पायी।
देह तेरा व्यापार बना, आइटम गानों का भण्डार बढ़ा।
सत्ता में तेरा किस्सा क्या, अर्थ में तेरा हिस्सा क्या।
बाजार में बजते गीतों में, बोल है तेरा मिसरा क्या।
जज़्बातों को सीने में दबा, आँसुओं को अपना कफन ओढ़ा।
चल पढ़ी है फिर वो त्याग लिए, इस सृष्टि सृजन का भार लिये।
ऐ पिंजरे के पंछी पर खोल, नभ छोटा है अब उसको बोल।
उठ नया तेरा इतिहास बना, जो हुआ वो नहीं अब कर जा।

बालश्रम

मास्टर कल्प कुमार आर्य,
सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य, स.ले.प.अ.

बालश्रम! यह एक है विकृति

कैसे मिटा दें हम इसकी आकृति।

मुख्यत: है इसके कारण तीन,

अशिक्षा, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि।

जिसमें माँ की गोद का साथ छूटा।

बचपन में ही सपना टूटा।

काम करने को है वो मजबूर।

यह है छोटे- छोटे बाल

सरकार ने अनेक योजनाएं है बनाई,

फिर भी पूरी आज तक न वो हो पाई।

यही है निर्दयी दुनिया का दस्तूर

यह बन गये बेचारे हाय! बालमजदूर।

बेटियां

श्रीमती विभा मण्डल
(ग्वालियर शाखा कार्यालय)

बेटियां होती है बड़ी प्यारी,
होती है माँ बाप की दुलारी,
घर में पड़ते ही उनके कदम,
खिल जाता है सबका जीवन,
आ जाता है जीवन में एक नया उमंग।
दिन भर करती है उछल कूद,
डाट भी दो तो मान जाती है खुद ब खुद,
बेटियों से ही है घर का मान,
देती है बड़ो को सम्मान,
बेटियों में होता है बड़ा स्वाभिमान,
पढ लिख समाज में उठती है कुल का नाम।
बुरी परिस्थितियों में भी नही छोडती हाथ,
जीवन भर देती है माँ बाप का साथ।
माँ बाप का घर छोड़ ससुराल जब जाती है,
घर को सुना कर याद बड़ा दिलाती है,
दूर रहकर भी रखती है सबका ख्याल,
उसके दूर जाने पर होता है बड़ा मलाल,
काश समाज की ऐसी रीत न होती,
बेटिया साथ रहती सदा तो उससे बड़ी कोई जीत न होती ।

ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ (BSOD)

श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.

दुनिया भर में लाखों लोग अपने काम के लिए विंडोज़ का उपयोग करते हैं। इनमें कई बड़ी कंपनियां भी शामिल हैं। लेकिन, विंडोज़ बनाने वाली माइक्रोसॉफ्ट के सर्वर में तकनीकी दिक्कतों के चलते कई विमान कंपनियों से लेकर बैंकों का कामकाज बुरी तरह से प्रभावित हुआ है।

कई विंडोज़ यूज़र खतरनाक ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ (BSOD) का सामना कर रहे हैं, जिससे अचानक सिस्टम शटडाउन या रीस्टार्ट हो रहा है। माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) के अनुसार साइबर सुरक्षा फर्म क्राउडस्ट्राइक का हालिया अपडेट इसका कारण हो सकता है। समस्या ये है कि दुनिया भर में लोग इससे प्रभावित हो रहे हैं।

एक व्यापक विंडोज़ बग के चलते दुनियाभर के लाखों यूज़र्स के सिस्टम 15.07.2024 रिकवरी मोड में चले गये। उनके सिस्टम पर एक एरर मैसेज के साथ ब्लू स्क्रीन दिखाई दे रही थी, जो आमतौर पर 'ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ' बग के रूप में जाना जाता है। इस समस्या से एयरपोर्ट्स, सरकारी कार्यालय, मीडिया हाउसेज, बिजनसेज, कई स्टॉक एक्सचेंज और यहां तक कि आपातकालीन सेवाएं भी प्रभावित हुईं। माइक्रोसॉफ्ट के सर्वर में आई इस समस्या ने लोगों को काफी परेशान किया हुआ है।

क्या है ब्लू स्क्रीन ऑफ डेथ

- BSOD एक गंभीर समस्या को दर्शाता है, जिसे ब्लैक स्क्रीन एरर या स्टॉप (STOP) कोड एरर के रूप में भी जाना जाता है।
- यह विंडोज़ को अप्रत्याशित रूप से बंद करने के लिए मजबूर करता है।
- इसमें आपको एक मैसेज दिखाई देता है, जिसमें लिखा होता है कि आपके कंप्यूटर को नुकसान से बचाने के लिए विंडोज़ को बंद कर दिया गया है।

यूज़र्स को हो रही है ये समस्या?

- रिपोर्ट बताती हैं कि इस बग ने मुख्य रूप से अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में व्यवसायों, बैंकों और सरकारी कार्यालयों को प्रभावित किया है।

- सोशल मीडिया पर कई यूज़र्स ने तकनीकी समस्या के स्क्रीन शॉट साझा किए हैं। इसमें वे रिकवरी स्क्रीन पर फंसे हुए हैं। इसमें पॉप अप दिखाई दे रहे हैं, जैसे कि ऐसा लगता है कि विंडोज़ सही तरीके से लोड नहीं हुआ है। इसके बाद स्क्रीन शटडाउन या रिस्टार्ट हो जा रही है।

विंडोज पर क्यों आ रहा यह एरर?

एक आधिकारिक माइक्रोसॉफ्ट ब्लॉग पोस्ट के अनुसार, ब्लू स्क्रीन एरर तब आता है, जब गंभीर समस्या होती हैं, जो विंडोज़ को तुरंत बंद या रिस्टार्ट करने के लिए बाध्य करती हैं। ये एरर्स या तो सॉफ़्टवेयर या हार्डवेयर समस्याओं के कारण हो सकते हैं। हालांकि, इस मामले में क्राउड़स्ट्राइक (Crowdstrike) ने स्वीकार किया है कि विंडोज़ में समस्या 12.07.2024 को जारी किए गए इसके एक अपडेट के कारण है। कंपनी ने अपने सपोर्टपेज पर एक बयान में कहा कि उसकी इंजीनियरिंग टीम इस समस्या को हल करने के लिए काम कर रही है।

विंडोज पर ब्लू स्क्रीन एरर को कैसे रोकें?

- ये एरर हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर में से किसी भी मूल के हो सकते हैं। अगर आपने हाल ही में नया हार्डवेयर इंस्टॉल किया है और BSOD का सामना किया है, तो उसे हटाकर अपने निजी कंप्यूटर को रीस्टार्ट करने का प्रयास करें।
- अगर फिर भी रिस्टार्ट में मुश्किल आती है, तो आप अपने सिस्टम को सेफ मोड में बूट कर सकते हैं।
- इसके अलावा इस बात का भी ध्यान रखें कि आपके सिस्टम में लेटेस्ट विन्डोस अपडेट इंस्टॉल होना चाहिए।
- अगर फिर भी समस्या आती है तो ज्यादा सहायता के सहायता के लिए ऑनलाइन संसाधनों या तकनीकी सहायता से परामर्श करें।

भारत की भू-राजनीति में भूमिका

श्री प्रशांत वशिष्ठ, स.ले.प.अ.

भारत, अपने विशाल संसाधनों, रणनीतिक स्थिति, और बढ़ती प्रभावशालीता के साथ, वैश्विक भू-राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ भारत की भू-राजनीति में भूमिका का एक संक्षिप्त अवलोकन है:

1. रणनीतिक स्थिति

भारत की भौगोलिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व, और दक्षिण-पूर्व एशिया के मिलन बिंदु पर स्थित, भारत क्षेत्रीय और वैश्विक व्यापार मार्गों के लिए एक प्रमुख खिलाड़ी है। भारतीय महासागर के साथ इसका तटवर्ती क्षेत्र समुद्री व्यापार और ऊर्जा मार्गों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. आर्थिक वृद्धि

विश्व की सबसे बड़ी और सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में, भारत का आर्थिक प्रभाव काफी है। इसका विशाल बाज़ार, तकनीकी प्रगति, और बढ़ती मध्यवर्गीय आबादी इसे कई देशों के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक साझेदार बनाती है। इस आर्थिक ताकत से भारत वैश्विक व्यापार नीतियों और निवेश प्रवाह पर प्रभाव डालता है।

3. क्षेत्रीय प्रभाव

भारत दक्षिण एशिया में एक प्रमुख खिलाड़ी है, जहां इसका पड़ोसी देशों पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (SAARC) जैसे क्षेत्रीय संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाता है और क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक और पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करता है।

4. रक्षा और सुरक्षा

भारत की बढ़ती रक्षा क्षमता, जिसमें परमाणु हथियार भी शामिल हैं, इसे भारतीय महासागर क्षेत्र में संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण राष्ट्र दर्शाती है। भारत सुरक्षा संवाद और गठबंधनों में भाग लेता है, जैसे कि Quad (Quadrilateral Security Dialogue) जिसमें अमेरिका, जापान, और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं, जो क्षेत्रीय खतरों का मुकाबला करने और स्थिरता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

5. राजनयिक जुड़ाव

भारत वैश्विक राजनय में सक्रिय भागीदारी करता है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र, G20, BRICS, और राष्ट्रमंडल जैसे प्लेटफ़ॉर्म शामिल हैं। यह प्लेटफ़ॉर्म वैश्विक मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, और सतत विकास को संबोधित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं, और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार की वकालत भी करते हैं।

6. आतंकवाद और सुरक्षा

भारत को आतंकवाद और क्षेत्रीय संघर्ष जैसे महत्वपूर्ण सुरक्षा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद विरोधी प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और वैश्विक साझेदारों के साथ मिलकर चरमपंथ और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देता है।

7. सांस्कृतिक राजनय

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और वैश्विक प्रवासी समुदाय इसके सॉफ्ट पावर को बढ़ाते हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान, शैक्षिक सहयोग, और मीडिया पहुंच के माध्यम से, भारत वैश्विक प्रभाव को बढ़ाता है और बेहतर अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रोत्साहित करता है।

8. जलवायु परिवर्तन और सतत विकास

भारत वैश्विक जलवायु वार्ताओं और पहलों में सक्रिय भागीदारी करता है। एक बड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक के रूप में, इसकी नीतियां और क्रियाएँ वैश्विक पर्यावरणीय रणनीतियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारत सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने, हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने, और जल की कमी और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे मुद्दों को संबोधित करने के लिए काम कर रहा है।

9. रणनीतिक साझेदारियाँ

भारत प्रमुख शक्तियों और क्षेत्रीय खिलाड़ियों के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारियों को सुदृढ़ कर रहा है। अमेरिका, रूस, जापान, और यूरोपीय संघ जैसे देशों के साथ इसके संबंध क्षेत्रीय स्थिरता और विभिन्न वैश्विक मोर्चों पर सहयोग के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

भारत की भू-राजनीति में भूमिका बहुपरकारी है, जिसमें आर्थिक, सैन्य, राजनयिक, और सांस्कृतिक आयाम शामिल हैं। इसकी रणनीतिक स्थिति, बढ़ती आर्थिक ताकत, और वैश्विक मामलों में सक्रिय भागीदारी इसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी बनाती है। जैसे-जैसे भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरता है, उसकी भू-राजनीतिक गतिशीलताओं को आकार देने में उसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण होती जाएगी।

मानव विकास की अवस्थाएं

श्री धीरज कुमार तिवारी, व.ले.प.अ.

जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव विभिन्न प्रकार के शारीरिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास का साक्षी बनता है। मानव का विकास गर्भाधान के समय से ही आरम्भ हो जाता है और जीवन के अन्तिम समय तक वह विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों को आत्मसात करता रहता है। विद्वानों ने मानव के कार्मिक विकास को सात अवस्थाओं में विभाजित किया है:-

1. गर्भावस्था (Pregnancy) - गर्भाधान से लेकर जन्म तक
2. शैश्वावस्था (Infancy) - जन्म से लेकर पांच वर्ष तक
3. बाल्यावस्था (Childhood) - पांच वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक
4. किशोरावस्था (Adolescence) - बारह वर्ष से लेकर अट्ठारह वर्ष तक
5. युवावस्था (Youth) - अट्ठारह वर्ष से लेकर पच्चीस वर्ष तक
6. प्रौढावस्था (Adulthood) - पच्चीस वर्ष से लेकार पचपन वर्ष तक
7. वृद्धावस्था (Old age) - पचपन वर्ष से लेकार मृत्यु तक

<u>गर्भावस्था</u>

सामान्यतः गर्भाधान से लेकर जन्म तक की अवधि छत्तीस से लेकर चालीस सप्ताह तक की होती है। इस अवधि में बच्चे के विभिन्न अंगों का निर्माण होता हैं एवं बच्चे की शारीरिक बनावट में होने वाले परिवर्तन को सप्ताह दर सप्ताह अनुभव किया जा सकता है। इस अवस्था में बच्चे का होने वाला शारीरिक विकास काफी हद तक वंशानुक्रम पर निर्भर करता है तथापि माता द्वारा ग्रहण किए पौष्टिक भोजन, शुद्ध पर्यावरण, सकारात्मक परिस्थितियों एवं चिकित्सकीय देखभाल का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। गर्भावस्था में माता को पर्याप्त मात्रा में फोलिक एसिड और आवश्यक विटामिन लेना चहिए जिससे बच्चे को जन्म के साथ होने वाली मस्तिष्क एवं रीढ की हड्डी सम्बन्धी विकृतियों से बचाया जा सके।

<u>शैश्वावस्था</u>

माता के गर्भ से बाहर आने के पश्चात इस अवस्था का आरम्भ होता है। इस अवस्था में उसके बार-बार बीमार होने की सम्भावना बनी रहती है। इस अवस्था में बच्चा मुख्य रुप से अपनी माता को पहचानता है और उसके सानिध्य में वह अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है। प्रारम्भ के लगभग चार माह तक बच्चा अपनी उदर पूर्ति के लिए माता के दूध पर

निर्भर रहता है एवं उसके पश्चात बच्चे को हल्का आहार देना आरम्भ किया जाता है ताकि उसके समग्र विकास के लिए उसे आवश्यक पौष्टिक तत्व प्राप्त हो सकें। इस अवस्था में शारीरिक विकास के साथ-साथ बच्चे का मानसिक विकास भी आरम्भ होता है। वह अपनी माता के अतिरिक्त अन्य लोगों को भी पहचानना आरम्भ करता है। इसी अवस्था में वह अन्य शारीरिक क्रियाएं जैसे करवट लेना, बिस्तर से नीचे उतरना, बैठना एवं चलना सीखता है। छः माह की आयु में बच्चे के दूध के दांत निकलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वह अपने आस-पास के वातावरण से सीखकर कुछ अक्षरों, जैसे अ, ब, प, एवं म का भी उच्चारण करने लगता है। वह खुश होने पर मुस्कुराता है और भूख लगने पर या अन्य तकलीफ होने पर रोने लगता है। दो वर्ष के पश्चात वह अपने भाई बहनों आदि का नाम उच्चारित करने में सक्षम होता है। तीन से चार वर्ष की अवस्था तक वह अपने आस पास के घरेलू जानवरों को भी पहचानने लगता है एवं उनकी आवाज़ निकालने का प्रयास करता है।

<u>बाल्यावस्था</u>

यह अवस्था बच्चे के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस आयु में वह विद्यालय जाना आरम्भ कर देता है जहां विभिन्न पृष्ठभूमि से आए बच्चों के सम्पर्क में आता है। वह दूसरे बच्चों की गतिविधियों को देखकर उनका अनुसरण करने का प्रयास करता है। सात-आठ वर्ष की आयु तक वह अच्छे बुरे का फर्क कुछ कुछ समझने लगता है।

<u>किशोरावस्था</u>

इस आयु वर्ग में किशोर का अधिकतम बुद्धि विकास होता है, यह विकास चौदह से सोलह वर्ष के बीच होता है। किशोर मानसिक स्वतंत्रता चाहता है, वह चाहता है कि कोई उसके कार्यक्षेत्र में दखल ने दें एवं वह स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहता है। उसमें सोचने, समझने, विचार करने एवं कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं का हल निकालने की क्षमता विकसित हो जाती है। किशोर में चिन्तन करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती हैं और विभिन्न सामजिक घटनाओं एवं गतिविधियों के बारे में जानने के लिए अनेकों प्रश्न करता है। तर्क किए बिना वह किसी तथ्य को स्वीकार नही करता है। वह अपने निर्णय स्वयं लेना चाहता है। अन्य बदलावों के साथ-साथ उसमें कल्पना शक्ति का भी विकास होता है जिसे वह विभिन्न विधाओं जैसे चित्रकारी, नृत्य, संगीत आदि माध्यमों से व्यक्त करता है। वह अपनी विद्यालयी शिक्षा पूरी कर कॉलेज में प्रवेश करता है जहां उसे यह एहसास होता है कि वह बड़ा हो गया है और अपनी सुरक्षा, सफलता व असफलता के लिए वह स्वयं जिम्मेदार है।

किशोरावस्था में लम्बाई बहुत तेज़ी से बढती हैं एवं सिर तथा मस्तिष्क का विकास जारी रहता हैं। पन्द्रह से सोलह वर्ष की आयु तक सिर का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है एवं हड्डियों में पूर्ण मजबूती आ जाती है तथा कुछ छोटी हड्डियां एक दूसरे से जुड़ जाती हैं। इस अवस्था में किशोर के सभी स्थायी दांत निकल आते हैं, इसके अतिरिक्त कन्धे एवं कूल्हे पूर्ण रुप से विकसित हो जाते हैं।

<u>युवावस्था</u>

यह वह अवस्था है जब युवा में पूर्ण मानसिक विकास हो जाता है। वह अपने समाज एव राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने लगता है। किसी भी देश की प्रगति उस देश के युवाओं के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य एवं देश के प्रति उनके समर्पण पर निर्भर करती है। अतः समाज और परिवार को युवाओं के सर्वांगीण विकास में अपना अधिकतम योगदान देना चाहिए।

प्रौढावस्था

इस अवस्था में व्यक्ति अपनी अवस्थाओं में हुए शारीरिक एवं मानसिक विकास की सहायता से जीवन को आगे बढ़ाता है। वह अपने लिए एक योग्य जीवन साथी का चयन करता है एवं उसके साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इसी अवस्था के प्रारम्भिक वर्षों में वह संतानोत्पत्ति करता है और उनके पालन पोषण का प्रबन्ध करता है। वह अपने व्यवसाय में पर्याप्त प्रगत्ति करता है एवं उसको बनाए रखने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है।

प्रौढावस्था के आखिरी वर्षों में वह पूर्व में किए गए अपने प्रयत्नों से उत्पन्न सफलता का आनन्द प्राप्त करता है और अपनी सन्तान के चहुँमुखी विकास के लिए यथासम्भव प्रयास करता है। वह वृद्ध होते अपने माता-पिता की देखभाल करता है और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करता है। इसके अतिरिक्त एक प्रौढ़ अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहते हुए अपने आगे के जीवन के बारे में योजना बनाता है।

वृद्धावस्था

यह अवस्था जीवन की अंतिम अवस्था होती है, इसी अवस्था में व्यक्ति अपने व्यवसास से सेवानिवृत्ति लेता है। वह अपने ज्ञान और अनुभवों से अपने परिवार एवं समाज को लाभान्वित करता है। इस अवस्था में वह अपने आराध्य की आराधना में रुचि लेता है एवं अपनी दिनचर्या का अधिकांश समय वह इसी कार्य में व्यतीत करता है। इस अवस्था के अंतिम वर्षों में व्यक्ति की सुनने और देखने की क्षमता कम हो जाती है। इस कारण से उसका स्वभाव चिढचिढ़ा हो जाता है।

आमतौर पर यह समझा जाता है कि वृद्धावस्था का मतलब बीमारियों एवं शिथिल होते शरीर के साथ जीना और अंतिम समय की प्रतीक्षा करना है। यह धारणा पूर्णता: असत्य है, यदि संतुलित आहार के साथ-साथ ज़रूरी व्यायाम एवं अस्वस्थ होने पर चिकित्सीय परामर्श लिया जाए तो इस अवस्था में भी एक सक्रिय जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

हम सबका यह कर्तव्य है कि हम वृद्धजनों का समुचित ध्यान रखें, उनका सम्मान करें ताकि उनके अनुभवों एवं ज्ञान का प्रकाश हमें ज्यादा से ज्यादा समय तक मिल सके।

शब्दों की पहचान

मास्टर प्रतीक गोयल,
पुत्र श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.

अगर कुछ संजोया है हृदय में तुम्हारे,

कभी उसको शब्दों की पहचान न देना ।

शब्द बदल जाते हैं ओष्ठ तक आते आते,

खो देते हैं स्वरूप अपना, श्रोता तक जाते-जाते।

चुभ जाते हैं शब्द अक्सर, पैने तीरों के भांति,

पहुंचा देते है आघात, देकर वे अशान्ति।

शब्द करते हैं काम कभी दवा के जैसे,

और देते हैं चैन कभी मरहम के जैसे।

शब्दों का सम्मोहन फैलाता है भ्रांति,

शब्द छल जाते हैं, प्रवंचक की भांति।

इसीलिए कहता हूँ, विचारों को काबू मे रखना,

कभी उसको शब्दो की पहचान न देना ।

संयुक्त राष्ट्र

श्री राकेश गोयल, स.ले.प.अ.

राष्ट्र संघ का गठन

औद्योगिक क्रांति इंग्लैंड में शुरू हुई और जल्द ही जर्मनी, फ्रांस और पुर्तगाल जैसे अन्य देशों में फैल गई। इन औद्योगिकीकृत देशों को दो चीजों की आवश्यकता थी- विनिर्माण के लिए कच्चा माल और उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं को बेचने के लिए नए बाज़ार। गैर-औद्योगिक एशियाई और अफ्रीकी देशों में उनके दोनों उद्देश्य हल हो गए। जल्द ही उन्होंने खुद को अमीर बनाने के लिए इन देशों को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया।

परिणामस्वरूप, वे एक-दूसरे से ईर्ष्या करने लगे और वे चाहते थे कि उनका साम्राज्य फले-फूले। वे आपस में लड़ने लगे जिसके परिणामस्वरूप अंततः एक महान युद्ध हुआ। इस युद्ध को प्रथम विश्व युद्ध कहा गया। यह 1914 में शुरू हुआ और 1918 तक चला।

कई शहर तबाह हो गए, लाखों निर्दोष लोगों और सैनिकों की जान चली गई। परिणामस्वरूप, लगभग हर जगह भोजन की कमी पैदा हो गई।

युद्ध से हुई तबाही से भयभीत देशों को एक साथ आकर शांति की दिशा में काम करने की प्रेरणा मिलीं। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने 'द लीग ऑफ नेशंस' का गठन किया। लीग में कुल 63 सदस्य देश थे, जिनमें फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम, इटली, जर्मनी, जापान और यू.एस.एस.आर. जैसी दुनिया की कुछ महान शक्तियां शामिल थीं।

लेकिन लीग सफल नहीं रहीं क्योंकि इसमें दो बड़ी खामियाँ थीं। दुनिया के सबसे ताकतवर देशों में से एक अमरीका इसका सदस्य नहीं था। लीग के सदस्यों ने 1930 के दशक में जापान, इटली और जर्मनी के आक्रमण का विरोध नहीं किया। परिणामस्वरूप, इस आक्रामकता के कारण द्वितीय विश्व युद्ध हुआ जो 1939 से 1945 तक चला।

संयुक्त राष्ट्र का जन्म

लीग विफल रही लेकिन लीग का विचार नहीं मरा। 1941 में, अमरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने अटलांटिक चार्टर पर हस्ताक्षर किए, जिसमें उन्होंने दुनिया में शांति बनाए रखने और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक अधिक प्रभावी प्रणाली की दिशा में काम करने का वचन दिया। 1942 में, इटली, जर्मनी और जापान के खिलाफ लड़ने वाले 26 देशों के मित्र राष्ट्र-द्वितीय विश्वयुद्ध गठबंधन के

प्रतिनिधियों ने एक घोषणा पर हस्ताक्षर किए। इस घोषणा में उन्होंने अटलांटिक चार्टर के सिद्धांतों को स्वीकार किया।

नियमों और विनियमों का एक सेट, जिसे संयुक्त राष्ट्र का चार्टर कहा जाता है, सैन फ्रांसिस्को, संयुक्त राज्य अमरीका में एक सम्मेलन में बनाया गया था। 24 अक्टूबर, 1945 को भारत सहित 51 सदस्य देशों ने इस पर हस्ताक्षर किये। इस दिन को संयुक्त राष्ट्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र की स्थापना शांति को बढ़ावा देने और दूसरे विश्व युद्ध को रोकने के लिए की गई थी। निरंतर अमरीकी भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र ने अपना मुख्यालय न्यूयॉर्क शहर में रखा। दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों को आश्वस्त करने के लिए कि इससे उनकी संप्रभुता को कोई खतरा नहीं होगा, संयुक्त राष्ट्र ने उन्हें अपने सबसे महत्वपूर्ण कार्यों पर वीटो शक्ति दी।

वीटो शक्ति प्राप्त करने वाले देश थे- संयुक्त राज्य अमरीका, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, सोवियत संघ और चीन। ये पांचों देश सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं।

इस प्रकार, वर्ष 1945 में स्थापित इस संगठन ने कई देशों को संघर्षों से बचने और समस्याओं को हल करने में मदद की है।

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों के कार्य और उपलब्धियाँ

किसी भी अन्य संगठन की तरह, संयुक्त राष्ट्र के भी कई कार्य हैं। इसका उद्देश्य राष्ट्रों के बीच विवादों को बातचीत के माध्यम से सुलझाकर और सशस्त्र संघर्षों को रोककर शांति बनाए रखना है। यह कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी और वैज्ञानिक विशेषज्ञता प्रदान करता है। इसे मानवीय, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को हल करने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। यह एक ऐसा केंद्र है जहां इन सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न देशों के प्रयास संयुक्त होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र का सदस्य बनने के लिए सबसे महत्वपूर्ण योग्यता किसी राष्ट्र की विश्व शांति बनाए रखने की इच्छा है। इसे संयुक्त राष्ट्र चार्टर के प्रावधानों को स्वीकार करना चाहिए। इसे संयुक्त राष्ट्र के कानूनों और निर्णयों का पालन करना चाहिए। उसे अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के साथ सहयोग करना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र के छह प्रमुख अंग- महासभा, सुरक्षा परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद, ट्रस्टीशिप परिषद, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय और सचिवालय है।

संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियाँ यूनेस्को, यूनिसेफ, डब्ल्यू.एच.ओ., एफ.ए.ओ., आई.एल.ओ. आदि है।

संयुक्त राष्ट्र की उपलब्धि

संयुक्त राष्ट्र का प्राथमिक उद्देश्य विश्व में शांति और सुरक्षा बनाए रखना है। तीसरे विश्व युद्ध का ख़तरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है। अब तक, कोई भी घटना या घटना जो इस युद्ध का कारण बन सकती है, उसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा नियंत्रित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र

विनाशकारी हथियारों और परमाणु बमों के उपयोग और प्रसार को रोकने में सफल रहा है। यह दुनिया के कई हिस्सों में गरीबी, अशिक्षा, भूख और बीमारियों को कम करने में सफल रहा है।

2004 के हिंद महासागर सुनामी ने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रों को प्रभावित किया, संयुक्त राष्ट्र के स्वयंसेवकों ने यूएनएचसीआर (शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त) और यूएनडीपी (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) जैसी विभिन्न संयुक्त राष्ट्र विशेष एजेंसियों के सहयोग से भाग लिया। एशिया के विभिन्न देशों ने बचाव प्रयासों और राहत कार्यों भाग लिया।

भारत वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के गठन के बाद से ही इसका सदस्य रहा है। हमारी शांतिप्रिय प्रकृति ने संयुक्त राष्ट्र के साथ हमारे संबंधों को बहुत स्वस्थ रखा है। भारत को संयुक्त राष्ट्र के आदर्शों पर पूरा भरोसा है। यह विश्व स्वास्थ्य संगठन, खाद्य और कृषि संगठन आदि जैसी एजेंसियों की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। भारत ने एक शांतिप्रिय, अहिंसक राष्ट्र के रूप में एक उच्च प्रोफ़ाइल बनाए रखी है।

1953 में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष बनीं। वह हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की बहन थीं।

संयुक्त राष्ट्र में भारत का योगदान

भारत ने धन और जनशक्ति से संयुक्त राष्ट्र का समर्थन किया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र के काम में मदद के लिए अधिकारियों को भेजकर संयुक्त राष्ट्र के अन्य देशों के साथ अपनी विशेषज्ञता साझा की है। संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना में कई भारतीय सैनिक हैं। उन्हें दुनिया भर में, जहां भी उनकी आवश्यकता होती है, भेजा जाता है। भारत ने कोरिया, ज़ैरे, साइप्रस और नामीबिया में संयुक्त राष्ट्र के लिए काम किया है। भारतीय अधिकारी संयुक्त राष्ट्र की शांति स्थापना सेनाओं के कमांडर रहे हैं।

भारत ने दक्षिण अफ़्रीका में श्वेतों द्वारा अश्वेतों के विरुद्ध अपनाई जाने वाली भेदभाव की नीति का विरोध किया। इस नीति को रंगभेद के नाम से जाना गया। रंगभेद की समाप्ति के बाद दक्षिण अफ़्रीका के साथ भारत के संबंध पुनः स्थापित हुए। 1956 में इज़राइल, इंग्लैंड और फ्रांस ने मिस्र पर हमला कर दिया और विश्व युद्ध का खतरा पैदा हो गया। भारत के समय पर हस्तक्षेप से युद्ध टालने में मदद मिली। संयुक्त राष्ट्र के निर्देशों के तहत हमारे सैनिक गाज़ा पट्टी और लेबनान में शांति लाने के लिए गए।

भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र का योगदान

हमारी समस्याओं के समाधान के लिए संयुक्त राष्ट्र के कई विशेषज्ञ भारत आते हैं। हमें विश्व बैंक, डब्ल्यूएचओ, एफएओ, यूनिसेफ आदि एजेंसियों से मदद मिली है।

संयुक्त राष्ट्र के एफएओ (खाद्य और कृषि संगठन) ने भारत में मछली पकड़ने के उद्योग के विकास में योगदान दिया है। मछुआरों को मछली पालन के आधुनिक तरीकों के बारे में निर्देश दिए गए हैं। इसकी सहायता से अनेक मत्स्य पालन स्थापित किये गये हैं।

इससे खेती के तरीकों को बेहतर बनाने में मदद मिली है। भारतीय वैज्ञानिकों के सहयोग से नए बीज, उर्वरक और कीटनाशक विकसित किए गए हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने देश के पिछड़े इलाकों में तैनात होने वाली नर्सों और स्वास्थ्य अधिकारियों को प्रशिक्षित करने में मदद की है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रयासों से हैजा, पोलियो, मलेरिया और चेचक जैसी बीमारियाँ ख़त्म हो गई हैं। यूनिसेफ ने आंगनवाड़ी कार्यक्रम को वित्तीय सहायता देकर योगदान दिया है।

आंगनबाड़ियों में शिक्षा के लिए कई गांवों के बच्चों और महिलाओं को एक साथ लाया गया है। यूनिसेफ ने माताओं को शिशुओं की देखभाल करना और स्वस्थ बच्चों का पालन-पोषण करना सिखाया है। भारत अक्सर अपने विकास कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए आईएमएफ (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) से पैसा उधार लेता है।

गुट निरपेक्ष आंदोलन

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व के सभी राष्ट्र दो गुटों में विभाजित हो गये- संयुक्त राज्य अमरीका (यूएसए) और सोवियत सोशलिस्ट गणराज्य संघ (यूएसएसआर)

एक गुट का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) ने किया और दूसरे का नेतृत्व सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक संघ (यूएसएसआर) ने किया। ये ब्लॉक सैन्य संधियों के आधार पर थे। दुनिया एक और युद्ध की ओर बढ़ रही थी। कई देशों को अपनी रक्षा के लिए इन दोनों महाशक्तियों में से किसी एक में शामिल होने के लिए मजबूर होना पड़ा। दो खेमों में समूहीकरण को संरेखण कहा जाता था। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तनाव को कम करने के लिए गुटनिरपेक्षता का प्रस्ताव रखा।

इस प्रस्ताव को मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल गमाल नासिर और यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसिप ब्रोज़ टीटो ने समर्थन दिया। वे भी पंडित नेहरू से सहमत थे कि विकासशील देशों को तटस्थ रहना चाहिए, यानी उन्हें किसी भी महाशक्ति के साथ गठबंधन नहीं करना चाहिए। उन्होंने 'गुटनिरपेक्ष' होने का निर्णय लिया और इस प्रकार गुटनिरपेक्ष आंदोलन का जन्म हुआ। आज एक सौ बीस देश इस आंदोलन का हिस्सा हैं और वे अपने देशवासियों के सामने आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए एक-दूसरे की मदद करने के लिए काम करते हैं। गुटनिरपेक्ष आंदोलन विश्व शांति और विकास के लिए एक आंदोलन बन गया है।

भारत और संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता उन सभी शांतिप्रिय राज्यों के लिए खुली है जो संयुक्त राष्ट्र चार्टर में निहित दायित्वों को स्वीकार करते हैं और इन दायित्वों को पूरा करने में सक्षम हैं। सुरक्षा परिषद की सिफ़ारिशों पर महासभा के निर्णय द्वारा राज्यों को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता में प्रवेश दिया जाता है।

भारत संयुक्त राष्ट्र के मूल सदस्यों में से एक था, जिसने 1 जनवरी 1942 को वाशिंगटन डी.सी. में संयुक्त राष्ट्र की घोषणा पर हस्ताक्षर किए थे। भारत संयुक्त राष्ट्र का एक चार्टर सदस्य है और इसकी सभी विशेष एजेंसियों और संगठनों में भाग लेता है।

सितंबर 2015 में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में एक भाषण में, भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि उनका देश समृद्धि के लिए एक स्थायी मार्ग पर चलने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने विकसित देशों से विकास और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनी वित्तीय प्रतिज्ञाओं का सम्मान करने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि भारत विकास की बुनियादी बातों यानी सभी के लिए आवास, बिजली, पानी और स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

भारत संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतों का पालन और समर्थन करता है। हमारी पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय सुषमा स्वराज ने 23 सितंबर, 2017 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 72वें सत्र को संबोधित किया। उनके संबोधन में दुनिया के सामने आने वाली चुनौतियों और गरीबों को सशक्त बनाने में भारत के योगदान को शामिल किया गया।

उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हमारे विश्व के लोगों के कल्याण, सुरक्षा, सद्भाव, अधिकारों और आर्थिक प्रगति के लिए की गई थी। भारत इस महान मिशन के प्रयासों का पूरा समर्थन करता है। उन्होंने कहा कि दुनिया बढ़ती हिंसा और आतंकवाद जैसी मुसीबतों में फंसी हुई है. दुनिया की आबादी का एक बड़ा हिस्सा भूख और गरीबी से परेशान है। इस गंभीर स्थिति में भारत ने सतत विकास की प्रक्रिया को आपस में जोड़ने के लिए कड़े फैसले लेने का साहस और नेतृत्व दिखाया है। भारत द्वारा शुरू किए गए सभी कार्यक्रमों, जैसे डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, स्वच्छ भारत, स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया आदि का मुख्य उद्देश्य गरीबों का सशक्तिकरण है।

यू.एन.ओ में भारत की भूमिका संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रबल समर्थकों में से एक रही है। इसने हमेशा यू.एन.ओ. के उद्देश्य को बढ़ावा दिया और इसमें सहयोग किया।

समय का सदुपयोग- सफलता की गारंटी

श्री संदीप पाण्डेय, स.ले.प.अ.

हम अपने सामान्य दैनिक जीवन में कार्य टालने वाले कुछ वाक्यों से आए दिन दो-चार होते रहते हैं जैसे ‘कल कर लेंगे’, ‘आगे देखा जाएगा’, ‘अभी तो फार्म निकला है दो चार दिन में देखते हैं’, ‘अभी आयकर रिटर्न की अंतिम तिथि तो बहुत दूर है’, ‘अंतिम तिथि अभी और आगे बढ़ेगी’, ‘आराम से करेंगे’, ‘आज काम करने का मन नहीं है, सोमवार को देखते हैं’, ‘अभी तो पत्र आया ही है, कोई अनुस्मारक थोड़े ही आ गया’ -------- आदि ।

यह कार्य को टालने की आदत हमारे स्वास्थ्य के लिए भी बहुत घातक होती है। काम बढ़ते चले जाते हैं जो एक दिन हमें बोझ लगने लगते हैं। बेचैनी बढ़ती है और रात को सुकून की नींद भी नही आती। इससे वितृष्णा का स्तर बढ़ता है और मन में स्थायी असंतोष जन्म ले लेता है। अब यदि अपूर्ण कार्य हमारे कार्यालयी उत्तरदायित्व के भाग है जैसे फ़ाइल/पत्र/पंजिकाए आदि, तब इस प्रकार की स्थिति कार्यालय में हमारी छवि को तो नुकसान पहुँचाती ही है बल्कि उच्चस्थ अधिकारियों द्वारा हमें मिलने वाली सहज प्रशंसा से भी वंचित कर देती है। कार्य की और अधिक विलंबित स्थिति अन्य प्रतिकूल परिस्थितियों (जैसे चेतावनी पत्र, कारण बताओ नोटिस, सेवा पुस्तिका में प्रतिकूल प्रविष्टि आदि) को भी आकर्षित कर सकती है।

इसके उलट यदि हम अपने कार्य समय पर पूर्ण कर लेते है तो न केवल हमारे मन में संतोष एवं आत्मविश्वास बढ़ता है बल्कि हमारी कार्यक्षमता का भी उत्तरोत्तर विकास होता रहता है। इस प्रकार कार्य हमें बोझ नहीं लगता बल्कि आनंद का विषय प्रतीत होता है। यदि पुनः कार्यालयी संदर्भ में कहें तो इस प्रकार से समय का सदुपयोग करते हुए ससमय कार्य संपादन न केवल हमारी छवि में चार चाँद लगा देता है बल्कि कार्यालय द्वारा समय-समय पर हमें उचित सम्मान (प्रशस्ति पत्र, नकद पुरस्कार, वार्षिक निष्पादन मूल्यांकन प्रतिवेदन में शानदार अंक प्राप्ति/ग्रेडिंग आदि भी दिलवाता है।

इसी संदर्भ में समय की अहमियत एवं सार्थकता का वर्णन ज्ञानी एवं विद्वान जनों ने समय-समय पर किया है यथा –

‘काल्ह करै सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलै होएगी, बहुरि करोगे कब’।।

कबीर दास जी ने समय पर कार्य पूर्ण करने की महत्ता पर ही उपरोक्त पंक्तियाँ लिखी हैं। उन्होंने इस बात के मर्म को जाना और समझा है कि हमारा जीवन समय के पल और क्षण के मिलने से बना हुआ है और हर पल तथा हर क्षण जो एक बार बीत जाता है वह फिर कभी वापस नहीं आता। हम अनुमान नहीं लगा पाते परंतु इस प्रकार क्षणों के बीतने से दिन, सप्ताह, मास और वर्ष बीतते जाते है। इसी पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी श्री रामचरितमानस में एक स्थान पर कहा है कि "दिवस जात नहीं लागत बारा"। अतः, समय के बीतने के साथ ही जीवन के दिन भी बीत जाते हैं। जो लोग समय की इस गति को नहीं समझते हैं और इसके महत्व को नहीं जानते हैं तथा समय को नष्ट करते हैं, समय भी उन्हें नष्ट कर देता है।

मनुष्य अपने जीवन में हुई किसी वस्तु की हानि की प्रतिपूर्ति तो कर सकता है परंतु खोया हुआ समय कभी वापस नहीं ला सकता। प्रायः लोग यह कहते भी हैं कि जिस प्रकार बंदूक से गोली निकल जाने पर वह किसी भी प्रकार से वापिस नहीं आ सकती, ठीक उसी प्रकार बीता हुआ समय किसी भी प्रकार से वापिस नहीं आ सकता।

अतः समय का सदुपयोग ही जीवन की उन्नति के द्वार खोल देता है। कार्य समय पर पूर्ण करने से ही हम धन-वैभव तथा सुख-शांति के पात्र बन सकते हैं। हम अपने प्रत्येक क्षण को एक दिन व प्रत्येक दिन को अपने जीवन का एक खंड मानें। इतिहास ऐसी अनगिनत महान विभूतियों का साक्षी है जिन्होंने समय के महत्व को पहचाना और अपना नाम अमर कर दिया। उदाहरणतः नेपोलियन के सेनापति द्वारा युद्ध स्थल पर सेना सहित निर्धारित समय से केवल पाँच मिनट देरी से पहुँचने के विलंब ने उसके विश्व-विजय के स्वप्न को धूल में मिला दिया और उस सेनापति को बंदी बना लिया गया। इसी प्रकार वनवास के दौरान भविष्य में युद्ध की संभावना को जानकर अर्जुन ने समय का सदुपयोग करके उसी सीमित समय में ही अनेक दिव्य अस्त्र-शस्त्र इकट्ठे कर लिए, जो अंततः पांडवों की विजय का आधार बनें। प्रथम अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की नींव रखने वाले, 'अर्थशास्त्र' ग्रंथ के रचनाकार एवं राजनीति-शास्त्र के प्रकांड पंडित चाणक्य भी समय के प्रतिक्षण का सदुपयोग करने के लिए जाने जाते हैं। अन्य उदाहरण जापान देश से लिया जा सकता है जिसके बारे में सर्वविदित है कि अगर वहाँ कोई ट्रेन कुछ सेकेंडों के लिए भी विलंबित हो जाए तो समस्त स्टाफ यात्रियों से औपचारिक क्षमा याचना तक करता है। शायद यही समय के सम्मान की भावना जापान को इस प्रकार का विकसित, समृद्ध एवं अनुकरणीय देश बनाती है।

इसके उलट हम देखते है कि महान वीर पृथ्वीराज चौहान की पराजय का कारण समय के महत्व को न पहचानना ही था। उनके द्वारा युद्ध की तैयारियों को जो समय दिया जाना चाहिए था वो उन्होंने लौकिक विषयों पर नष्ट कर दिया और अंततोगत्वा पराजित

होकर अपमान का सामना करना पड़ा। अतः स्पष्ट है कि जो व्यक्ति समय को नष्ट करता है तथा इसका दुरुपयोग करता है, समय उसे बर्बाद कर देता है। किसी काम का समय बीत जाने पर केवल पश्चाताप ही कर सकते हैं। अंग्रेज़ी की एक पंक्ति के अनुसार-

"समय और लहर किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं।"

इस लेख के प्रारंभ में जिन सामान्य वाक्यों को इंगित किया था उनके पार्श्वप्रभाव (साइड इफेक्ट्स) वाले वाक्य कुछ ऐसे भी हो सकते हैं – 'सर्वर डाउन चल रहा है– लगता है फॉर्म भर नहीं पाएगा', 'सप्ताहांत है और उसके बाद बैंक तीन दिन तक बंद रहेंगे– अब क्या करें?', 'आयकर विवरणी जमा करने की अंतिम तिथि नहीं बढ़ाई सरकार ने- काश शुरू में ही निपटा लेते इस काम को', 'हाउस-टैक्स जमा करने की अंतिम तिथि भी निकल गई- ध्यान ही नहीं रहा– मैंने सोचा था आराम से आगे जमा कर देंगे– रह गया', 'अनुस्मारक आ गया है- अच्छा होता कि उसी दिन इस पर कार्यवाही शुरू कर दी होती'-------------आदि ।

निष्कर्ष रूप में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि समय एक ईश्वरीय वरदान है और कार्य को टालने वाले लोग वह कार्य भी नहीं कर पाते हैं, जिस कार्य को करने की योग्यता उनमें है। यदि हम इस तथ्य को समझ जाएँ कि जो कार्य हमें करना है वह यदि हमें ही करना है तो कल क्यों– आज क्यों नहीं? क्यों हम अपने ही कार्यों के "बैंकलॉग का भारी बस्ता" उठाकर घूमते रहें! क्यों हम उस 'इलेवेन्थ-आवर' डेड्लाइन की प्रतीक्षा करें। इसी को कार्यशाली संदर्भ में हम कह सकते हैं कि हम सभी समयबद्धता के महत्व को पहचानें, समय के सदुपयोग की आदत डालें, अपनी कार्यालयीन दिनचर्या की एक सारणी बनाएं, आवंटित कार्यों की प्राथमिता के आधार पर उन्हें नियत समय पर करने का प्रयास करें। यदि कार्य बड़ा है तो उसे चरण-वार पूरा करने का प्रयास करें।

"एक बात तो निश्चित है कि हम वह कार्य तो कभी पूरा कर ही नहीं पाएंगें जिसकी हमने कभी शुरुआत ही न की हो"।

सुव्यवस्थित घर और जीवन

श्रीमती गिन्नी अरोड़ा, स.ले.प.अ.

घर केवल ईट-सीमेंट की चार दीवारी से नहीं बनता, घर बनता है, उसमे रची-बसी प्यार की खुशबू, हंसी-ठिठोलियाँ, दादी नानी की कहानियों, बचपन की शरारतों और पास-पड़ोस से जुडे ढ़ेर सारे किस्सों और कहानियों से। तभी तो चाहे हम कही भी रहें, वहाँ की चीज़ें हमें बार-बार उनसे जुडी बातों और घटनाओं को याद दिलाती है और हम भी अकसर उन्हें याद करने के बहाने ढूँढते रहते हैं। इन खट्टी मीठी यादों का लुत्फ कई बार हमारी ज़िंदगी का ज़ायका बदल देता है। मगर इस बात का दूसरा पहलू यह भी है कि इसी चक्कर में हमारा घर किसी म्यूजियम में बदलता चला जाता है और फिर कहीं दूसरी जगह जाते या रिनोवेशन कराते समय अजीब सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। हम न तो उन्हें फेंक पाते हैं और न रखने की हालत में होते हैं क्योंकि इतने सालों में वे सामान जीवन का हिस्सा बन गए हैं और उन चीजों से हमें एक मोह-सा हो गया है।

गहरी यादों का जुड़ाव-प्रोडक्टिविटी कोच और 'व्हाट्स योर एकसक्यूज़ फॉर नोट कलियरिंग योर क्लटर' बुक की लेखिका जूलियट लैन्डो पॉप बताती हैं, चीज़ें हमें अतीत से बाँधे रखती है। फिर चाहे वह व्यक्तिगत तौर पर हों या सामूहिक रूप से। अपनों से खास अवसरों पर मिले उपहार और कहीं भ्रमण पर खरीदी गई चीज़ें हमें संबंधित व्यक्ति या जगह की याद दिलाती है। इस वजह से हम खुद को उन चीज़ों से दूर नहीं कर पाते और घर में ऐसी चीज़ों का जमावड़ा बढ़ता ही चला जाता है। इन वस्तुओं का मोह घर को अव्यवस्थित कर देता है। इन चीज़ों से भावनात्मक एवम सांस्कृतिक जुड़ाव मन को असमंजस में डाल देता है और हम उन्हें घर से हटा नहीं पाते।

पुनरावृत्ति की चाहत-बीबीसी के कार्यक्रम 'द रिपेयर शो' में एक बार ऐसी ही वस्तुओं के बारे में बताया गया जिन्हें हम छोड़ना नहीं चाहते। उसमें बताया गया कि ऐसी वस्तुएं हमारी याद्दाश्त में से उन यादों को दोहराने और उनमें फिर से पहुँच जाने की भावनाओं को जगाती है। वस्तुत: यह मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव है। वह बहुत हद तक अपनी भावनाओं को वश में रखना चाहता है। यादों से जुड़ा रहना, उन्हें बार-बार और कभी-कभी न चाहते हुए भी याद करते रहना, उसे अच्छा लगता है। पुरानी चीज़ों से हमारी स्मृतियों का यह जुड़ाव हमें कभी उन वस्तुओं से दूर नहीं होने देता।

अच्छी नहीं हर याद- दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर और रिमेंबरिंग फ्रॉम द आउट्साइड: पर्सनल मेमोरी एण्ड पर्सपेक्टिव माइंड' पुस्तक के लेखक क्रिस मेकॉल अपनी पुस्तक में लिखते हैं, "कई बार चीजे अपनी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में भी हमारी यादों में संजोई रहती है। कई बार वे हमारी कड़वी स्मृतियों को ताजा कर देती है। नकारात्मकता हर हाल में बुरी होती है। इसलिए इसे अपने ऊपर हावी न होने दें। आप हर इस वस्तु को हटाने की कोशिश करें, जो आपकी बुरी यादों से जुडी है।"

कुछ सुखद उदासियाँ – प्रोफ़ेशनल डीक्लटरर और आर्गोनाइजर, 'सियान प्लेसचली' इन चीज़ों की प्रकृति के बारे में उल्लेख करते हुए बताते हैं। कुछ चीज़ें हमें आश्चर्यजनक रूप से सुखद उदासियाँ भी देती हैं। जो हमें अच्छा महसूस कराती हैं। यह ठीक है कि वस्तुएं हमें अतीत से जोड़ती हैं। हमें उनसे मोह भी हो जाता है, लेकिन हर वस्तु से जुड़ी हमारी याद वास्तव में घर को अजायबघर भी बना सकती है। इसलिए हमें थोड़ी बुद्धिमत्ता से इनसे निपटना चाहिए। ताकि घर व्यवस्थित लगें और हमारी यादें भी सहेजी जा सकें। ऐसा इसलिए, क्योंकि घर ही एक ऐसी स्थान होता है जहाँ हमारा अतीत अपने सम्मान के साथ और भविष्य अपनी महत्वाकांक्षा के साथ वर्तमान में रहता है।

मोह में खो जाने का डर मनुष्य की आदत है कि आवश्यकता से अधिक धन और वस्तुओं का संचय करना हमें जिन चीजों की जरूरत नहीं भी होती। उन चीज़ों को भी खरीदते रहते हैं और पुरानी चीज़ों को संजोते रहते हैं। जैसे शॉपिंग मॉल में डिस्काउंट खत्म होने से पहले जल्दी-जल्दी कपड़े, वस्तु आदि खरीद लेना चाहते हैं। मनोविज्ञान में इसे परिग्रह कहते हैं। परंतु हमें अपरिग्रह को अपनाना चाहिए यानि विचार, व्यक्ति या वस्तु के प्रति मोह या आसक्ति न होना।

अव्यवस्था हटाने के सुझाव:

1. 90/90 नियम – यदि अपने पिछले 90 दिनों में किसी वस्तु का उपयोग नहीं किया है और आप अगले 90 दिनों में भी उसका प्रयोग नहीं करेंगे, तो उसे बाहर कर दें।
2. 12-12-12 चुनौती स्वीकार करें-12 ऐसी चीज़ें खोजे जिन्हे फेंक दिया जाए [जैसे एक्सपायर्ड (expired) दवाईयां व खाद्य पदार्थ], 12 दे दी जाएं व 12 जिन्हें उनके उचित स्थान पर वापस लौटा दिया जाएं।
3. दे देने वाला सामान कुछ वेबसाईट (websites) पर बेचा जा सकता है या फिर दान दे दें या रीसाइकल कर लें। दान करना उस सामान को नया जीवन देना और किसी को उसका उतना ही आनंद लेने का मौका देने का एक शानदार तरीका है। फेंकें गए सामान को कूड़ेदान में डालने से पहले रीसाइकल किये जाने वाले सामान से अलग कर लें।
4. घर फैला रहता है तो झगड़े भी होते हैं। आपको कोई चीज़ चाहिए और वह नहीं मिल रही है तो झगड़े शुरू हो जाते हैं। जब घर ही व्यवस्थित रहेगा तो चीज़ें आसानी से मिल जाएंगी।

मेघालय (शिलांग एवं चेरापूंजी)

श्री हरीश चंद्र पाण्डेय, कल्याण सहायक

दिनांक 18 मार्च 2023 से 23 मार्च 2023 तक हमारे द्वारा की गई मेघालय यात्रा की कुछ यादें अपने यात्रा वृतांत में लिखने जा रहा हूँ। हमारी इस यात्रा में आप सभी का स्वागत है। मेघालय, जिसका अर्थ है बादलों का निवास, पूर्वोत्तर भारत का एक खूबसूरत राज्य है जो अपने हरे भरे परिदृश्य, लुढकती पहाड़ियों और राजसी झरनों के लिए जाना जाता है। चीड़ के पेड़ों से घिरा खूबसूरत शहर शिलांग मेघालय की राजधानी है। शिलांग हिल स्टेशन अपने सुरम्य स्थलों और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर हमें रोमांचक पर्वत चोटियाँ, झरने, क्रिस्टल की भांति स्पष्ट झीलें, लुभावने सुन्दर गोल्फ कोर्स संग्रहालय देखने का मौका मिला। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता के साथ भारी वर्षा, लंबी गुफाएँ, सबसे ऊंचे झरने और सुन्दर परिदृश्य देखने को मिलें। यहाँ घूमने का सबसे अच्छा समय सितंबर और मई के बीच होता है। यात्रा में मेरा परिवार जिसमें मैं, मेरी पत्नी एवं पुत्र हैं। मेरे साथ ससुराल परिवार के 5 सदस्य भी शामिल थे।

हम सभी को मेघालय देखने का एक अलग ही उत्साह था, हमने जाने से पहले यूट्यूब की सुविधा से वहाँ की जानकारी ले ली थी। हमने बॉल्मर लॉरी द्वारा अपने आने-जाने की टिकटें बुक करवाई जो कि दिल्ली से कोलकाता तथा कोलकाता से शिलांग हवाई अड्डा तक थी, वहां से टैक्सी द्वारा शिलांग पहुंचे। हमारे मित्र द्वारा हमारे रहने की व्यवस्था बहुत ही बढ़िया मेहमान गृह में की गई थी।

हम लोग जब शिलांग हवाई अड्डा पहुचें तो एक अलग ही अहसास हुआ क्योंकि बहुत दिनों बाद हम दिल्ली की व्यस्तता से दूर सुकून वाली जगह पहुँचें थे। वहाँ पर शुद्ध वातावरण, शांति एवं प्रकृति की सुंदरता ऐसी दिखाई दे रही थी कि जैसे यह सब हमारे स्वागत के लिए की गई हो। हमारे मित्र द्वारा भेजी टैक्सी में हम लोग शिलॉग के लिए रवाना हुए। कार चालक प्रीतम जी के मार्गदर्शन में हम आनंद लेते हुए सबसे पहले रास्ते पर उमीयाम झील के पास से निकले। यह झील बहुत ही बड़ी है। यहाँ मोटर नाव द्वारा झील में घूमा जा सकता है। धीरे-धीरे हम पहाड़ों की ओर पहुँच रहे थे, वहाँ की सुंदरता और बढ़ती जा रही थी।

मेघालय को पूर्वी भारत का स्कॉटलैंड भी कहा जाता है और हल्की बूंदों और ठंडी-ठंडी हवा के कारण यहाँ सभी मौसमों में घूमना उपयुक्त है। यह एक महिला-प्रधान राज्य हैं जहां मातृ-सत्तात्मक परिवार ढांचा है। पुरुष शादी उपरांत पत्नी के घर रहते हैं तथा बाज़ारों,

व्यवसायों तथा बड़े-बड़े ओहदों पर महिलाएं काम करती हैं। यहां मुख्यतः दो जनजातियां हैं, यथा खासी एवं गारो, जिनके मध्य सांस्कृतिक विभिन्नता है।

एक से डेढ़ घंटे के सफर के बाद हम अपनी मंज़िल पहुँच गए, अपना सामान मेहमान गृह में रख दोपहर के भोजन के लिए अपने मित्र के घर पहुंचे। उनके परिवार द्वारा किए गए स्वागत से सफर की सारी थकान दूर हो गई।

दूसरे दिन प्रातः काल से अधिक वर्षा के कारण हमने पूरे दिन अपने विश्राम गृह में वहाँ के भोजन, वर्षा एवं वादियों का आनंद लिया। हमारी प्यारी भांजी आश्वी वहाँ खरगोशों के साथ खेला रही थी। सायं में हम शिलांग के मशहूर पुलिस बाज़ार घूमने गए। यह शिलांग का मुख्य बाज़ार है। यहाँ के जीवा शाकाहारी भोजनालय में हमने रात्रिभोज किया। मैं यह बताना चाहूँगा की शिलांग में शाकाहारी लोगों/पर्यटकों को थोड़ी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यहाँ सूरज जल्दी अस्त हो जाने के कारण अंधेरा थोड़ी जल्दी हो जाता है इसलिए दोपहर बाद दो घंटे के आस-पास ही घूम सकते हैं। यहाँ की रात्रि शांत, घनघोर काली घटाओं से छाई हुई थी।

तीसरे दिन हम नाश्ता करके शिलांग पीक की ओर बढ़े। यह सबसे ऊंची चोटी है। ऊँचाई होने की वजह से यहाँ से पूरा शिलांग का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। हमने यहाँ पर बढ़िया फोटोग्राफी का आनंद लिया। उसके पश्चात हम एलीफेंट फॉल्स की ओर बढ़े। इस खूबसूरत झरने में हमने काफी समय बिताया, इसके बाद चाय के बागानों की प्राकृतिक सुन्दरता को देखने के बाद हम यहाँ की संस्कृति के लिए डॉन बोस्को म्यूज़ियम गए, हमने यहाँ की संस्कृतियों एवं परंपरा को जाना। उसके उपरांत हम दिन के भोजन के लिए जीवा रेस्टोरेंट पुलिस बाज़ार पहुंचे और खाने के बाद पुलिस बाजार घूमें। यहाँ पर काफी होटल, शोरूम, होमस्टे, एवं हस्तशिल्प की दुकानें स्थित हैं। वापिस विश्राम गृह आ गए।

चौथे दिन हम प्रातः चेरापूंजी को निकले। चेरापूंजी अपनी अद्भुत जलवायु, लुभावने झरनों और चूना पत्थर की गुफाओं के साथ पृथ्वी पर सबसे अधिक नमी वाली जगह होने के लिए प्रसिद्ध है। यह मेघालय का एक दर्शनीय शहर है। यह शिलांग से 50 कि.मी. दक्षिण पश्चिम में पूर्वी खासी पहाड़ियों में स्थित है। यह अपनी अद्भुत जलवायु, घाटियों के लिए प्रसिद्ध है। हम नोह सिंगिथियांग फॉल्स (सेवन सिस्टर फॉल्स) गए। यह भारत का चौथा सबसे ऊंचा झरना है। यह 1035 फीट ऊंचाई से गिरता है। पठार से सात धाराएँ एक साथ प्रवाहित होने के कारण ही इसे सेवन सिस्टर फॉल्स कहा जाता है। यह बारिश के समय ही देखा जा सकता है।

"फिर हमने मावसाई गुफा की यात्रा की। यहाँ अंधेरे में 150 मीटर की लम्बी गुफा में जाने का एक रोमांचकारी अनुभव प्राप्त हुआ। यह एक प्राकृतिक गुफा है, जिसमें हमें चट्टानों से बचाव कर झुकते हुए मोबाईल की रोशनी से धीरे-धीरे अदंर बढ़ें। फिर हम लोग दोपहर भोजन के लिए ओरेंज-रूट रेस्टोरेंट पहुंचे, यह एक शुद्ध शाकाहारी भोजनालय है। यहां 250 से 300 रुपये में थाली (सब्जी, गुजराती कढ़ी, गोभी, सब्जी, रसम, दाल, सलाद, रोटी चावल

एवं राजमा व एक स्वीट) का आनंद ले सकते हैं। भोजन बहुत स्वादिष्ट था। यहाँ से हमें चेरापूंजी में रात्रि विश्राम के लिए होटल की व्यवस्था करनी थी, होमस्टे पसंद ना आने के कारण बहुत मुश्किल से सिटी होटल में 2500/- रु का प्रतिकक्ष मिला, लेकिन यहाँ फिर मुश्किल में पड़े क्योंकि यहां कहीं शुद्ध शाकाहारी भोजनालय नहीं था। हमने जैसे-तैसे यहाँ रात बिताई।

प्रातः हम यहाँ से वापिस शिलांग के लिए रवाना हुए और हम डैनथलेन फाल्स की ओर गए, यह कच्ची सड़क 5 से 6 कि.मी. की है। यहाँ हमने झरने का लुत्फ उठाया, झरने के पानी की फुहारें हमारे ऊपर गिरने से आनंद का अनुभव हो रहा था, फिर हम वेई सावडोंग फॉल्स की ओर गए। यहाँ पहुंचने के लिए हमें बहुत ही खतरनाक रास्तों पर चलकर जाना पड़ा। मेरी सासुमाँ जी ने हिम्मत करके मेरे साथ इस कच्चे सीढ़ीनुमा रास्ते को नीचे की ओर चलकर पार किया। यह दूरी लगभग एक कि.मी. के आसपास से अधिक होगी और उतना ही फिर ऊपर भी आना पड़ा। लेकिन जब नीचे पहुंचकर हमने झरना देखा तो हमने महसूस किया कि डर के आगे जीत का कथन सत्य है, बहुत ही सुंदर नज़ारा देखने को मिला जहां अधिकतर लोग नहीं पहुंच पाते। यहाँ का पानी क्रिस्टल की तरह पारदर्शी एवं चट्टानें एवं पत्थरों की एक अदभुत संरचना देखने को मिली, झरने में से निकलती हुई तेज़ आवाज़ एक अलग ही अहसास करा रही थी।

इसके बाद अंत में हम अरवाह गुफा की और गए। सड़क मार्ग से 1 कि.मी. चलने के बाद हम इस गुफा तक पहुंचे। पूरा रास्ता घनघोर जंगल से होकर जाता है। प्रवेश द्वार के पास लाईट लगी हुई है, लेकिन उसके बाद टॉर्च की रोशनी से अंदर जाना होता है। बीच में गुफा का रास्ता बहुत ही संकरा है, जिसमें स्वयं को बचा-बचा कर चलना पड़ता है। इसके अंदर अंधेरा एवं सीलन भरा वातावरण रोमांच बढ़ा रहा था। अरवाह गुफा की दीवारों और छतों पर बनी 'चूना पत्थर की उत्कृष्ट कृतियों' की जितनी प्रशंसा की जाए वह कम ही होगी।

सायं को वापिस हम शिलांग अपने मित्र के घर पहुंचे और उन्हें अपनी यात्रा के बारे में अवगत कराया। उन्होंने हमारे रहने की व्यवस्था अपने घर में ही करवाई और अब नई प्रातः आ गई जिस दिन हमें दिल्ली को वापिस आना था। हम उनके घर से नाश्ता करके कार द्वारा शिलांग हवाई अड्डा पहुचे वहाँ से जहाज से डिबरुगढ़, असम फिर वहाँ से दिल्ली की ओर आगमन किया और मंगल यात्रा के साथ अपने शहर दिल्ली पहुंचे।

पूरी यात्रा में हम सभी ने बहुत आनंद एवं अनुभव लिया। हम उन सभी सदस्यों का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने हमारी इस यात्रा को सफल एवं आनंदमय बनाया। अपनी यात्रा का श्रेय सबसे अधिक हमारे मित्र व उनके परिवार को जाता है। उनको हार्दिक धन्यवाद और उन सभी सदस्यों का भी धन्यवाद जो इस यात्रा वृतांत को पढ़ने में समय देंगें। मेरी राय से मेघालय की यात्रा ट्रैकिंग, झरने, वन्य जीवन, संस्कृति, प्रकृति के सौन्दर्य को अपने जीवन की यादों में बसाने का एक विशेष महत्व होगा। प्रकृति प्रेमियों एवं प्राकृतिक शिक्षा हेतु यह एक महत्वपूर्ण यात्रा होगी। धन्यवाद।

अकेलेपन की तरफ बढ़ता समाज

श्री प्रशांत वशिष्ठ, स.ले.प.अ.

आज के इस आधुनिक दौर में किसी व्यक्ति के पास चार सच्चे दोस्तों के नाम बताने को नहीं है। इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हैं कि सच्चा दोस्त कौन होता है।

सच्चे दोस्त को, जब हम मुसीबत में हो तब, सबसे पहले जिस आदमी का नाम हमें याद आए, वही हमारी असल दोस्त है। मज़े की बात यह है कि कई बार यह वो व्यक्ति होता है, जिसे हम अपना दुश्मन समझ रहे होते हैं। जैसे कि हमारे माता, पिता, जीवनसाथी, भाई एवं बहन होते हैं। पर इस सच्चे दोस्त के साथ हम ज्यादा हँसते बोलते नहीं है और न ही उनके साथ हम अधिक समय बिताते है।

दुनिया अकेली है, लोग भीड़ में अकेले घूम रहें हैं और सबको सच्चे दोस्त की तलाश है। कार्यालय में अक्सर सिर झुकाए लोग आते हैं और चुपचाप निकल जाते हैं। आजकल के युग में किसी को किसी पर विश्वास नहीं रह गया है। लोगों को यह डर सताता है कि कोई हमारी चुगली न कर दें, यदि हम कोई बात साझा करें तो उस का गलत फायदा न उठा लें। जबकि सच्चे दोस्त के साथ तो अंतरंगी से अंतरंगी बात भी बेहिचक साझा की जाती है। खुलकर हँसा बोला जाता है।

इस आधुनिक युग में जहाँ हर जगह इतनी प्रतियोगिताएँ हैं कि बचपन से ही दूसरों से एक कदम आगे रहना हमें सिखाया जा रहा है। आज के युग में यदि कोई बच्चा दोस्तों की मदद कर रहा है या नोट्स किताबें साझा कर रहा है तो उसे बेवकूफ समझते है। घरवाले उससे उलट सवाल पूछते हैं कि वह दोस्त तुम्हारे लिए क्या करता है? सच्ची दोस्ती नि:स्वार्थ, त्याग मांगती है समय मांगती है।

असल दोस्त वह होता है जो आपके मुँह पर सही और गलत को गलत बोलने की ताकत रखता है। वह आपसे ईर्ष्या नहीं करता कि कही आप उससे आगे न निकाल जाएँ।

अकेलेपन से बढ़ते हैं नकारात्मक विचार

इस संबंध में एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि अकेलापन निराशा लेकर आता है। अकेलेपन में व्यक्ति नकारात्मक विचारों से घिर जाता है। उसे कहीं भी कोई ऐसा उपाय नहीं

सूझता है, जिससे उसकी समस्याएं खत्म हो सकें। नकारात्मक विचारों से व्यक्ति का अकेलापन बहुत ही गंभीर हो जाता है। घर-परिवार के लोगों की यादें आती है।

अकेलेपन के नुकसान से बचें

अकेलापन मन में नकारात्मक विचार भर देता है। लंबे समय तक इस स्थिति में रहने से व्यक्ति को मानसिक बीमारियाँ हो सकती है। अनजाना भय सताने लगता है। मन में गलत भावनाएं जागने लगती है। इसीलिए अकेलेपन से बचना चाहिए। जब भी नकारात्मक विचार बढ़ने लगे तो मन को शांत करना चाहिए। सोच को सकारात्मक बनाना चाहिए। अकेलेपन को एकांत में बदलना चाहिए। हम ध्यान कर सकते हैं। भगवान की भक्ति कर सकते हैं। मंत्र जाप कर सकते हैं। अच्छी किताबें पढ़ सकते हैं। कुल मिलाकर अकेलेपन में ऐसे काम करें जो हमारी सोच सकारात्मक बनाएं, मन प्रसन्न करें, जीवन में आनंद को बढ़ाएं।

कुछ लोग सफलतापूर्वक अपने बचपन की दोस्ती को पूरे जीवनभर लेकर चलते हैं जबकि कुछ गलतफहमी, समय की कमी या दूसरे कारणों से बीच में ही समाप्त कर देते हैं। कुछ लोगों के पास उनके किंडरगार्डेन या प्राइमरी स्तर में बहुत सारे दोस्त रहते हैं। लेकिन कोई एक या शायद कोई भी इसे बाद के जीवन में आगे नहीं बढ़ता है। कुछ लोगों के पास केवल एक या दो मित्र होते हैं जिन्हें वे बाद के अपने बुढ़ापे के दिनों में भी बहुत अच्छे से आगे लेकर चलते हैं। दोस्त परिवार के बाहर या घर का भी कोई सदस्य हो सकता है, पारिवारिक सदस्यों में से कोई एक पड़ोसी है रिश्तेदार आदि।

मित्र अच्छे बुरे दोनों प्रकार के हो सकते हैं- अच्छे दोस्त, अच्छे रास्ते पर ले जाते है जबकि बुरे मित्र गलत राह पर ले जाते हैं। इसलिये हमें जीवन में दोस्त चुनते समय सावधान रहना चाहिए। हमारे पास अपनी भावनाओं को बांटने और व्यक्त करने के लिए जीवन में कोई खास व्यक्ति होना चाहिए। सुख और दु:ख या किसी भी प्रकार की बात करने के लिये अपने अच्छे दोस्तों का साथ जीवन में जरूर होना चाहिए, जो हमें कठिन कार्य करने और बुरे समय से निकलने के लिए प्रेरित करता हैं ।

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2024 की कुछ झलकियां

कार्यालय के कार्मिकों/उनके परिवारजनों द्वारा प्रस्तुत चित्र

साभार: *सुश्री आयुषी साजवाण, पुत्री श्री अशोक कुमार सजवाण, व.ले.प.अ.*

साभार: *मास्टर जय, पुत्र श्री धीरज कुमार तिवारी, व.ले.प.अ.*

साभार: मास्टर आदिव कनीनवाल, पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.

साभार: मास्टर आरव कनीनवाल, पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.

साभार: मास्टर आदिव कनीनवाल, पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.

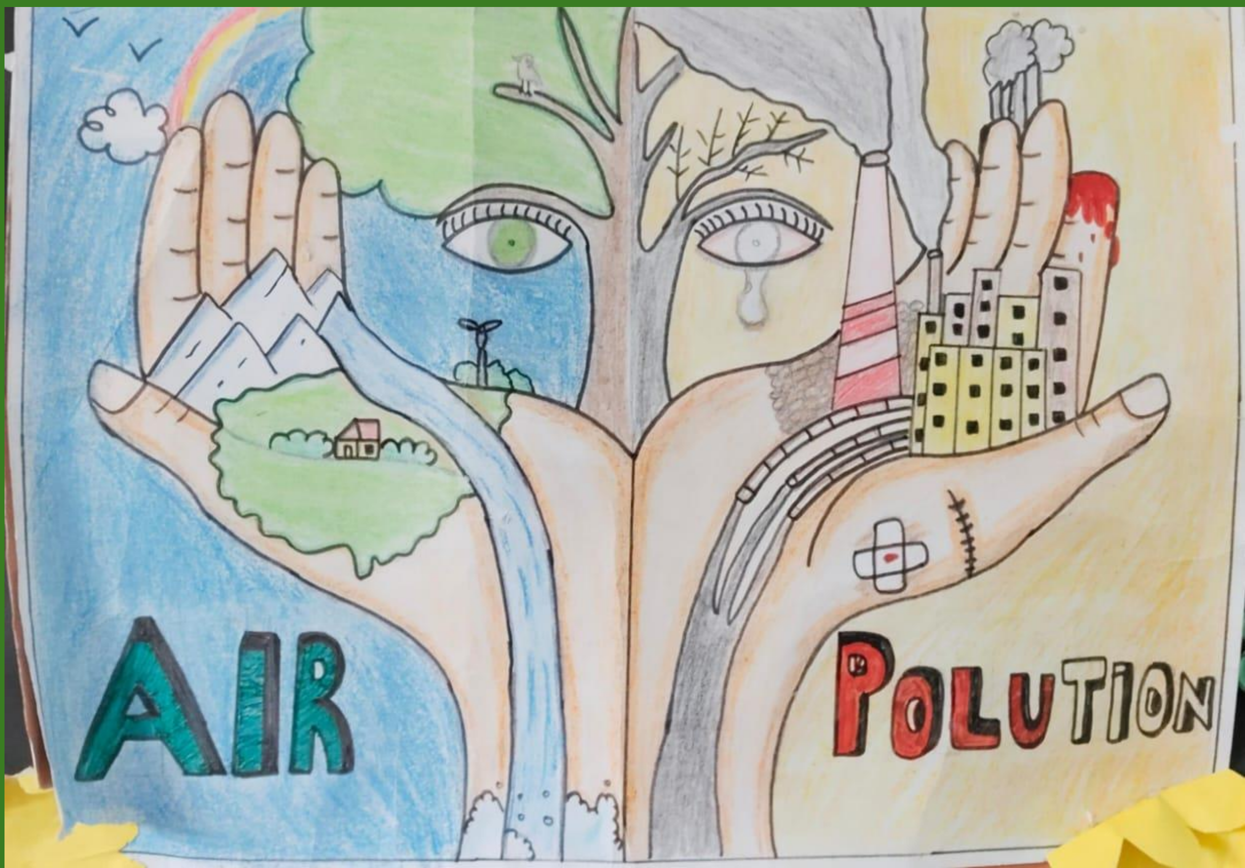

साभार: मास्टर आरव कनीनवाल, पुत्र श्री जितेंद्र, स.ले.प.अ.

साभार: कुमारी भव्या नेगी, पुत्री श्रीमती कौशल्या, व.ले.प.

साभार: कुमारी भव्या नेगी, पुत्री श्रीमती कौशल्या, व.ले.प.

साभार: सुश्री कुंजल, पौत्री श्री खुशहाल चंद, सहायक पर्यवेक्षक

साभार: सुश्री कुंजल, पौत्री श्री खुशहाल चंद, सहायक पर्यवेक्षक

साभार: *सुश्री कुंजल, पौत्री श्री खुशहाल चंद, सहायक पर्यवेक्षक*

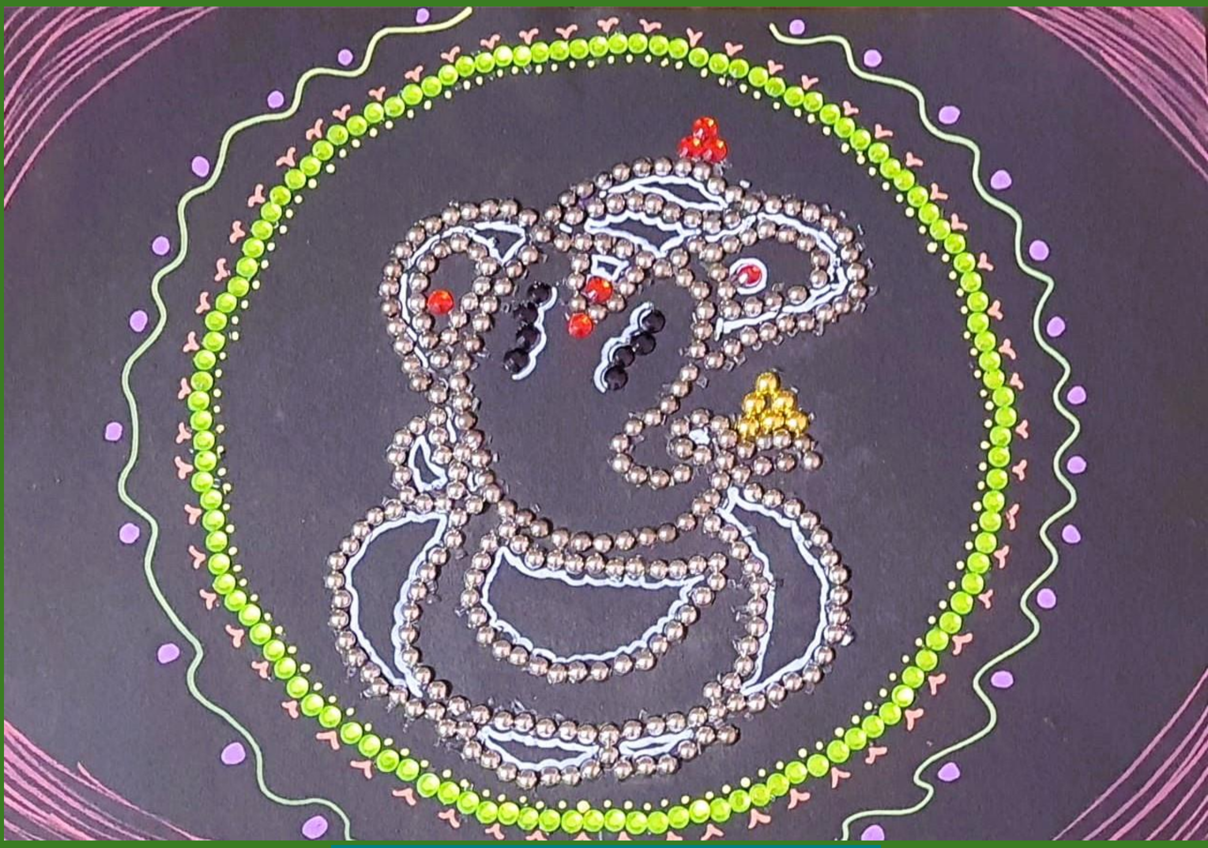

साभार: *श्रीमती शालिनी दहिया, स.ले.प.अ.*

साभारः कुमारी लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

साभारः मास्टर प्रिंस, पुत्र श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.

साभारः मास्टर प्रिंस, पुत्र श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.

साभारः कुमारी भाविका, पुत्री श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.

साभारः कुमारी भाविका, पुत्री श्रीमती सरिता, डी.ई.ओ.

साभारः कुमारी आहाना झा, पुत्री श्री धर्मेन्द्र झा, लेखापरीक्षक

साभारः कुमारी आहाना झा, पुत्री श्री धर्मेन्द्र झा, लेखापरीक्षक

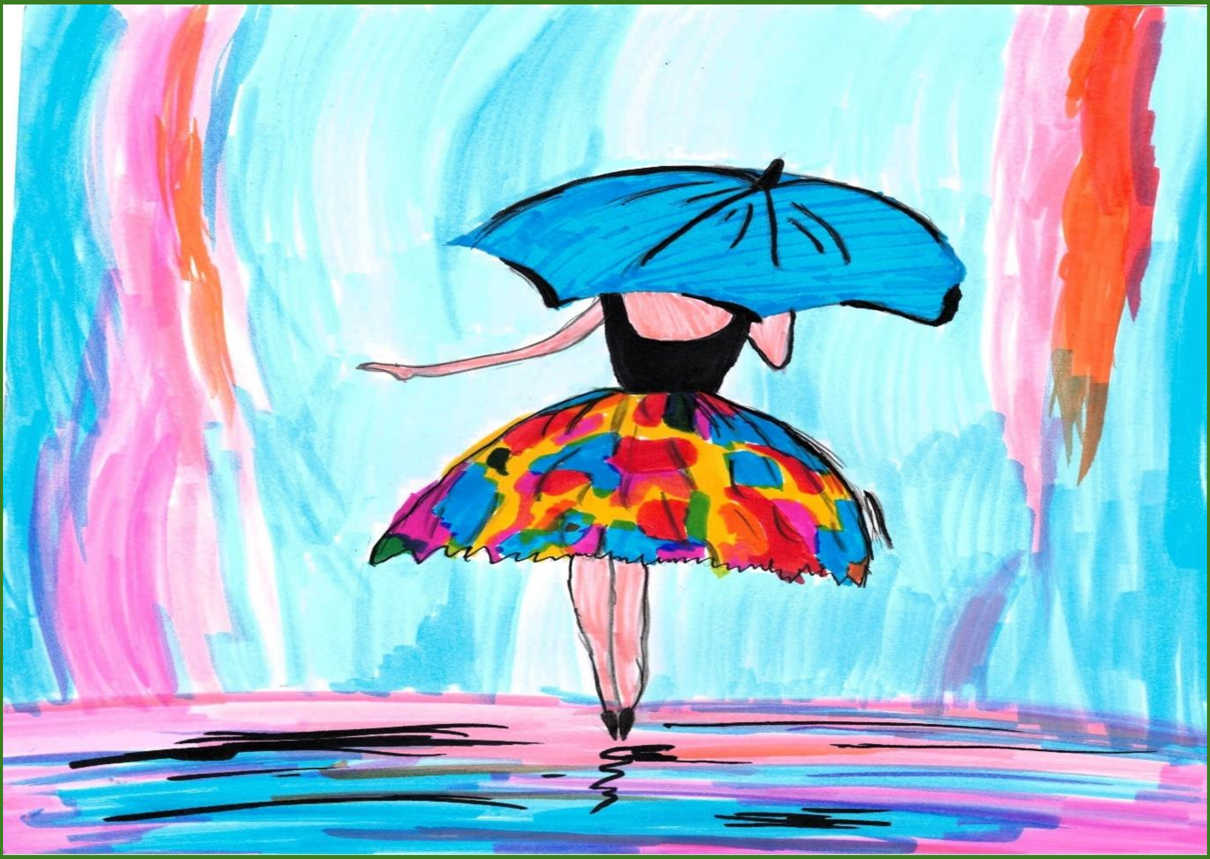
साभारः कुमारी अमायरा झा, पुत्री श्री धर्मेन्द्र झा, लेखापरीक्षक

साभार: श्रीमती सुभा भारती, पत्नी श्री संदीप कुमार बरनवाल, लेखापरीक्षक

साभार: श्रीमती सुभा भारती, पत्नी श्री संदीप कुमार बरनवाल, लेखापरीक्षक

साभार: कुमारी कशिश, भतीजी श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

साभार: कुमारी कशिश, भतीजी श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

साभार: कुमारी लावण्या, पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

साभार: कुमारी कशिश, भतीजी श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

“पेड़ लगाओ”

मास्टर आरव कनीनवाल,
पुत्र श्री जितेंद्र कुमार, स.ले.प.अ.

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,

हरा भरा जीवन बनाओ,

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,

हरा भरा जीवन बनाओ,

छाया ये हमको देते है,

बाढ़ से हमको बचाते है,

प्रदूषण दूर हटाते है,

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,

हरा भरा जीवन बनाओ,

लकड़ी, कपड़ा, फल, फूल, छाया,

सब कुछ पेड़ ने दिया है,

सच्चा साथी पेड़ ही है,

जीवन हमारा सवारा है,

पेड़ नहीं तो हम नहीं,

पेड़ लगाएं काटे नहीं,

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ,

हरा भरा जीवन बनाओ

माँ का क़र्ज़...

श्री राजेश कुमार, व.ले.प.

एक बार बेटे और माँ में बहस शुरू हो गयी। बेटे ने माँ को कहा माँ, तू हमेशा यही कहती रहती है, कि माँ का कर्ज़ा कभी नहीं उतर सकता। अब मैं तंग आ गया हूँ ये सब सुनकर। आज मैं तेरे अगले पिछले सब क़र्ज़ चूका दूंगा। बता कितना कर्ज़ा है तेरा? तुझे क्या चाहिए? रूपया, सोना, चांदी, जेवर? बता माँ ऐसा क्या दूं, जिससे तेरा कर्ज़ा उतर जाए।

माँ ने बेटे को बड़े आराम से कहा- बेटा, ये रुपये पैसे सोने चांदी से तो मेरा कर्ज़ा नहीं उतरेगा। अगर तुझे मेरा क़र्ज़ उतारना है, तो एक काम कर, आज रात तू मेरे पास, मेरे कमरे में सो जा। अगर तू एक रात के लिए मेरे पास सो जाएगा, तो मैं समझूंगी कि तूने मेरा क़र्ज़ उतार दिया।

बेटे ने सोचा, कि सिर्फ एक रात की ही तो बात है, सो जाता हूँ माँ के पास। जैसा तय हुआ था, उस दिन बेटा माँ के कमरे में ही सो गया।

जैसे ही बेटे को नींद आनी शुरू हुई, माँ ने बेटे को जगा दिया और कहा- बेटा, प्यास लगी है, एक ग्लास पानी पिला दे।

बेटे ने कहा- ठीक है माँ, अभी लाता हूँ।

माँ ने थोड़ा पानी पिया और बाकी पानी बेड पर फेंक दिया, जहाँ बेटा सोया था।

बेटे ने कहा- अरे, माँ ये क्या किया? तुमने तो मेरी जगह सारी गीली कर दी। अब मैं कैसे सोऊंगा।

माँ ने कहा- बेटा गलती हो गयी। कोई बात नहीं सो जा। अभी सूख जाएगा। बस एक रात ही तो सोना है तुझे।

बेटा जैसे तैसे उस गीले बेड पर सो गया। अभी आँख थोड़ा भारी हुई ही थी, कि माँ ने फिर बेटे को जगा दिया और कहा- बेटा पानी पिला दे।

अब बेटे को थोड़ा गुस्सा आ गया और उसने माँ को कहा -- माँ अभी तो पानी पिया था, इतनी जल्दी प्यास लग गयी?

माँ ने कहा- बेटा गर्मी बहुत ज़्यादा है ना, इसलिए प्यास लग रही है। एक गिलास और पानी पिला दे।

बेटे ने थोड़ा मुंह बनाया और पानी का गिलास लेकर आ गया। माँ ने थोड़ा पानी पिया और बाकी पानी फिर बेटे की जगह पर फेंक दिया।

अब बेटे का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। बेटे ने माँ को बहुत अपशब्द कहे। बेटे ने कहा- माँ तू पागल हो गयी है क्या? तूने मेरी जगह पर पानी गिरा दिया। बार बार मेरा बिस्तर क्यों गीला कर दिया? इस बार बेटे ने दर्जनों बातें सुना दी अपनी माँ को, लेकिन माँ कुछ ना बोली।

माँ ने धीमी आवाज़ में कहा- बूढी हो गयी हूँ ना बेटा, गलती से गिर गया। कोई बात नहीं एक रात की बात है। तू सो जा, अभी थोड़ी देर में सूख जाएगा।

जैसे तैसे बेटा फिर गीले बिस्तर पर लेट गया। काफी देर तक नींद नहीं आयी। लेकिन 1 घंटे बाद फिर से बेटे की आँखें नींद से भारी होने लगी और तभी माँ ने बेटे को फिर से उठा दिया और कहा- बेटा पानी...!

माँ ने अभी इतना कहा ही था, कि बेटा झल्ला उठा और बोला- भाड़ में जाए तेरा कर्ज़ा, मैं जा रहा हूँ अपने कमरे में सोने।

इतना सुनते ही माँ ने बेटे के गाल पर एक ज़ोरदार तमाचा मारा और कहा- तू मेरा कर्ज़ा उतारने चला था। तू एक बार मेरे कमरे में सो गया और मैंने सिर्फ दो बार तेरा बिस्तर गीला कर दिया, तो तू भाग रहा है यहाँ से।

मैंने तो तेरा बिस्तर साफ़ पानी से गीला किया, लेकिन जब तू छोटा था, तो मेरा बिस्तर अपने पेशाब और मल से गीला करता था और मैं खुद गीले पर लेटती थी और तुझे सूखे बिस्तर पर लिटाती थी। मैं सारी रात तेरी गन्दगी में सोती थी, लेकिन फिर भी मेरा प्यार, कभी भी तेरे लिए कम नहीं हुआ।

मैंने तो सिर्फ दो बार पानी माँगा, तो तुझे इतना गुस्सा आ गया। पर जब तू छोटा था, तो रात में कभी पानी, तो कभी दूध मांगता था और मैं हर बार मुस्कुरा कर, अपने हाथों से तुझे पिलाती थी।

जब तू रात को बीमार होता था, तो पूरी रात तुझे अपने सीने से लगा कर, आँगन में घूमती थी, ताकि तू सो जाए।

और आज तू निकला है, माँ का क़र्ज़ चुकाने। बेटा एक जन्म तो क्या? माँ का क़र्ज़ तू 7 जन्मो में भी नहीं उतार सकता।

बिलकुल सही है। वाकई में माँ का क़र्ज़ कोई नहीं उतार सकता और माँ बाप के महत्त्व का तो तभी आभास होता है, जब कोई खुद माँ बाप बनता है।

आँखों में आँसू आ गए पढ़ कर

श्री राजेश कुमार, व.ले.प.

एक दिन एक बुज़ुर्ग डाकिये ने एक घर के दरवाजे पर दस्तक देते हुए कहा... "चिट्ठी ले लीजिये।"

आवाज़ सुनते ही तुरंत अंदर से एक लड़की की आवाज गूंजी..." अभी आ रही हूँ...ठहरो।"

लेकिन लगभग पांच मिनट तक जब कोई न आया तब डाकिये ने फिर कहा.."अरे भाई! कोई है क्या, अपनी चिट्ठी ले लो...मुझे और बहुत जगह जाना है..मैं ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं कर सकता....।"

लड़की की फिर आवाज़ आई..., "डाकिया चाचा, अगर आपको जल्दी है तो दरवाज़े के नीचे से चिट्ठी अंदर डाल दीजिए, मैं आ रही हूँ कुछ देर और लगेगी।"

अब बूढ़े डाकिये ने झल्लाकर कहा, "नहीं, मैं खड़ा हूँ, रजिस्टर्ड चिट्ठी है, किसी का हस्ताक्षर भी चाहिये।"

तकरीबन दस मिनट बाद दरवाज़ा खुला।

डाकिया इस देरी के लिए खूब झल्लाया हुआ तो था ही, अब उस लड़की पर चिल्लाने वाला था लेकिन, दरवाज़ा खुलते ही वह चौंक गया और उसकी आँखें खुली की खुली रह गई। उसका सारा गुस्सा पल भर में फुर्र हो गया।

उसके सामने एक नन्ही सी अपाहिज कन्या जिसका एक पैर नहीं था, खड़ी थी।

लड़की ने बेहद मासूमियत से डाकिये की तरफ अपना हाथ बढ़ाया और कहा...दो मेरी चिट्ठी...।

डाकिया चुपचाप डाक देकर और उसके हस्ताक्षर लेकर वहाँ से चला गया।

वो अपाहिज लड़की अक्सर अपने घर में अकेली ही रहती थी। उसकी माँ इस दुनिया में नहीं थी और पिता कहीं बाहर नौकरी के सिलसिले में आते जाते रहते थे।

उस लड़की की देखभाल के लिए एक कामवाली बाई सुबह शाम उसके साथ घर में रहती थी लेकिन परिस्थितिवश दिन के समय वह अपने घर में बिलकुल अकेली ही रहती थी।

समय निकलता गया।

महीने, दो महीने में जब कभी उस लड़की के लिए कोई डाक आती, डाकिया एक आवाज देता और जब तक वह लड़की दरवाजे तक न आती तब तक इत्मीनान से डाकिया दरवाज़े पर खड़ा रहता।

धीरे धीरे दिनों के बीच मेलजोल औऱ भावनात्मक लगाव बढ़ता गया।

एक दिन उस लड़की ने बहुत ग़ौर से डाकिये को देखा तो उसने पाया कि डाकिये के पैर में जूते नहीं हैं। वह हमेशा नंगे पैर ही डाक देने आता था।

बरसात का मौसम आया।

फ़िर एक दिन जब डाकिया डाक देकर चला गया, तब उस लड़की ने, जहां गीली मिट्टी में डाकिये के पाँव के निशान बने थे, उन पर कागज़ रख कर उन पाँवों का चित्र उतार लिया।

अगले दिन उसने अपने यहाँ काम करने वाली बाई से उस नाप के जूते मंगवाकर घर में रख लिए।

जब दीपावली आने वाली थी उससे पहले डाकिये ने मुहल्ले के सब लोगों से त्यौहार पर बख्शीश चाही।

लेकिन छोटी लड़की के बारे में उसने सोचा कि बच्ची से क्या उपहार मांगना पर गली में आया हूँ तो उससे मिल ही लूँ।

साथ ही साथ डाकिया ये भी सोचने लगा कि त्यौहार के समय छोटी बच्ची से खाली हाथ मिलना ठीक नहीं रहेगा। बहुत सोच-विचार कर उसने लड़की के लिए पाँच रुपए के चॉकलेट ले लिए।

उसके बाद उसने लड़की के घर का दरवाजा खटखटाया।

अंदर से आवाज आई.... "कौन?"

"मैं हूं गुड़िया...तुम्हारा डाकिया चाचा".. उत्तर मिला।

लड़की ने आकर दरवाज़ा खोला तो बूढ़े डाकिये ने उसे चॉकलेट थमा दी और कहा.. "ले बेटी अपने ग़रीब चाचा के तरफ़ से"....

लड़की बहुत खुश हो गई और उसने कुछ देर डाकिये को वहीं इंतजार करने के लिए कहा..

उसके बाद वह अपने घर से एक बड़ा सा डिब्बा लाई और उसे डाकिये के हाथ में देते हुए कहा, "चाचा, मेरी तरफ से दीपावली पर आपको यह भेंट है।"

डिब्बा देखकर डाकिया बहुत आश्चर्य में पड़ गया। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे।

कुछ देर सोचकर उसने कहा, "तुम तो मेरे लिए बेटी के समान हो, तुमसे मैं कोई उपहार कैसे ले लूँ बिटिया रानी?"

लड़की ने उससे आग्रह किया कि "चाचा मेरी इस गिफ्ट के लिए मना मत करना, नहीं तो मैं उदास हो जाऊंगी।"

"ठीक है", कहते हुए बूढ़े डाकिये ने पैकेट ले लिया और बड़े प्रेम से लड़की के सिर पर अपना हाथ फेरा मानो उसको आशीर्वाद दे रहा हो।

बालिका ने कहा, “चाचा इस पैकेट को अपने घर ले जाकर खोलना।”

घर जाकर जब उस डाकिये ने पैकेट खोला तो वह आश्चर्यचकित रह गया, क्योंकि उसमें एक जोड़ी जूते थे। उसकी आँखें डबडबा गई।

डाकिये को यक़ीन नहीं हो रहा था कि एक छोटी सी लड़की उसके लिए इतना फ़िक्रमंद हो सकती है।

अगले दिन डाकिया अपने डाकघर पहुंचा और उसने पोस्टमास्टर से फरियाद की कि उसका तबादला फ़ौरन दूसरे इलाक़े में कर दिया जाए।

पोस्टमास्टर ने जब इसका कारण पूछा, तो डाकिये ने वे जूते टेबल पर रखते हुए सारी कहानी सुनाई और भीगी आँखों और रुंधे गले से कहा, "सर..आज के बाद मैं उस गली में नहीं जा सकूँगा। उस छोटी अपाहिज बच्ची ने मेरे नंगे पाँवों को तो जूते दे दिये पर मैं उसे पाँव कैसे दे पाऊँगा?"

इतना कहकर डाकिया फूटफूट कर रोने लगा ।

पति-पत्नी की नोक झोंक में प्रयुक्त सम्पूर्ण हिंदी वर्णमाला संकलित कविता...

श्री राजेश कुमार, व.ले.प.

मुन्ने के नंबर कम आए,
पति श्रीमती पर झल्लाए,
दिनभर मोबाइल लेकर तुम,
टें टें टें बतियाती हो...
ख़ाक नहीं आता तुमको,
क्या मुन्ने को सिखलाती हो?

यह सुनकर पत्नी जी ने,
सारा घर सिर पर उठा लिया।
पति देव को लगा कि ज्यों,
सोती सिंहनी को जगा दिया।

अपने कामों का लेखा जोखा,
तुमको मैं अब बतलाती हूँ।
आओ तुमको अच्छे से मैं,
क, ख, ग, घ सिखलाती हूँ।

सबसे पहले "क" से अपने,
कान खोलकर सुन लो जी..
"ख"से खाना बनता घर में,
मेरे इन दो हाथों से ही!

"ग" से गाय सरीखी मैं हूँ,
तुम्हें नहीं कुछ कहती हूँ ।
"घ" से घर के कामों में मैं,
दिनभर पिसती रहती हूँ ।

😆 😆

पतिदेव गरजकर यूँ बोले..
"च" से तुम चुपचाप रहो
"छ" से ज्यादा छमको मत,
मैं कहता हूँ खामोश रहो।

"ज" से जब भी चाय बनाने,
को कहता हूँ लड़ती हो..
गाय के जैसे सींग दिखाकर,

"झ" से रोज झगड़ती हो।

पत्नी चुप रहती कैसे,
बोली "ट" से टर्राओ मत
"ठ" से ठीक तुम्हें कर दूँगी..
"ड" से मुझे डराओ मत।

बोले पतिदेव सदा आफिस में,
"ढ" से ढेरों काम करूं..
जब भी मैं घर आऊं,
"त" से तुम कर देतीं जंग शुरू।

"थ" से थक कर चूर हुआ हूँ..
आज तो सच कह डालूँ मैं।
"द" से दिल ये कहता है...
"ध" से तुमको धकियाऊं मैं!

बोली "न" से नाम न लेना,
मैं अपने घर जाती हूँ।
"प" से पकड़ो घर की चाबी
मैं रिश्ता ठुकराती हूँ।

"फ" से फूल रहे हैं छोले,
"ब" से उन्हें बना लेना।
"भ" से भिंडी सूख रही हैं,
वो भी तल के खा लेना...!!

"म" से मैं तो चली मायके,
पत्नी ने बांधा सामान।
यह सुनते ही पति महाशय,
के तो जैसे सूखे प्राण

बोले "य" से ये क्या करती
मेरी सब नादानी थी...
"र" से रूठा नहीं करो.....
तुम सदा से मेरी रानी थी।

"ल" से लड़कर कहते हैं कि..
प्रेम सदा ही बढ़ता है।
"व" से हो विश्वास अगर तो,
रिश्ता कभी न मरता है।

"श" से शादी की है तो हम,
"स" से साथ निभाएंगे...
"ष" से इस चक्कर में हम....
षटकोण भले बन जाएंगे।

पत्नी गर्वित होकर बोली,
"ह" से हार मानते हो।
फिर न नौबत आए ऐसी
वरना मुझे जानते हो।

"क्ष" से क्षत्राणी होती है नारी
"त्र" से त्रियोग भी सब जानती है
"ज्ञ" से हे ज्ञानी पुरुष! चाय पियो
और खत्म करो यह राम कहानी!

हिन्दी दिवस की बधाई 🙏🙏

विज्ञान का चमत्कार

सुश्री लावण्या,
पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

एडिसन ने किया बल्ब का आविष्कार,

जिससे दूर हुआ संसार का अंधकार।

सारी दुनिया में फैल गया यही समाचार,

यह तो था, विज्ञान का चमत्कार।

राइट बंधुओं ने बनाया हवाई जहाज़,

जिससे पूरे हुए मानव के उड़ने के ख्वाब।

पंछी जैसा था उसका आकार,

यही तो था विज्ञान का चमत्कार।

ग्राहम बेल ने बनाया ऐसा यंत्र,

जिससे हो सकती थी बात, दूर देश से तुरंत,

आजकल आ गए हैं इसके कई प्रकार,

यही तो है, विज्ञान का चमत्कार।

इस चमत्कार से हुआ मानव जाति का कल्याण,

ऐसे महा वैज्ञानिकों को हमारा शत-शत प्रणाम।

विश्व शांति

सुश्री लावण्या,
पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

एक ऐसी दुनिया की कल्पना जहाँ शांति हर जगह व्याप्त है। मानवता के इतने सारे संकटों और विवादों के बीच अक्सर हम सभी एक सुकून बारी दुनिया की कल्पना करते है। हम सब मिलकर सोचते हैं। कि कितना अद्भुत होगा अगर गम सब अपने बोलने की भाषा के रूप में केवल दया, ममता और प्यार का ही सहारा ले। सोचिए, जब हम एक ऐसी दुनिया की बात करते हैं। जहाँ हर कोने में शांति की बात होती है। वहाँ हर व्यक्ति एक दूसरे से के साथ समझदारी से बात करता है। और समस्या खोजने का प्रयास करता है। इस दुनिया में सिर्फ एक ही भाषा होती है। वो भी प्यार की दया की और एक दूसरे को भावनाओं को समझना और समर्थन करना। विचार कीजिए, जब लोग अपने बीच की अनबन छोड़कर आपस में मिलकर काम करते हैं। और सपनों की दुनिया बनाते है। एक ऐसी दुनिया जहाँ लोग भूखे सोते हैं। हम सभी को समझना चाहिए कि विश्व शांति का सपना हर किसी के मन में है। हमें अपने आपको एक ऐसा समाज का हिस्सा बनाना होगा जो दया, मानवता और समरसता की बुनियाद पर निर्मित हो। इसलिए हम सबको एक साथ मिलकर काम करना होगा। हमारी छोटी-छोटी कृतिया हमारी दयालुता के एक बेहतर और शांत विश्व की नीव बनाएगी। इस सपने को साकार करने के लिए हम सभी मिलकर एक संकल्प लें कि हम प्यार और दया के भाषा से बातचीत करेंगें हमेशा एक दूसरे के साथ मिलजुलकर रहेंगे और एक बेहतर विश्व की दिशा में अपना योगदान देंगें। शांति और प्रेम ही वो भाषा है, जो हर किसी के दिलों को जोड़ती है और सभी को एक साथ ले जाती है।

अभी तो छोटा बच्चा हूँ

सुश्री लावण्या,
पुत्री श्री हरीश कुमार, एम.टी.एस.

मैं एक छोटा बच्चा हूँ,

छोटे-छोटे कदम बढ़ाकर आगे बढ़ते जाना है।

समय से सोना समय से जागना,

समय से पढ़ने जाना है। आगे बढ़ते जाना है।

मम्मी पापा का कहना माने, टीचर का सत्कार करें,

सगी साथी अपने हैं। अच्छा सा व्यवहार करें,

समय की कीमत समझेंगे इसको नहीं गंवाना है।

आगे बढ़ते जाना है।

हम ही डॉक्टर, इंजीनियर या होंगें अधिकारी,

या सम्पन्न किसान बन कर अधिक अन्न उपजाना है।

पुलिस फोर्स का हिस्सा बनकर शांति बनाए रखना है,

या सेना में भर्ती होकर दुश्मन को बाहर भगाना है।

आगे बढ़ते जाना है।

माँ कहती है। बेटा-बेटी में फर्क नहीं है,

दोनों को समर्थ बनाना है।

हम सब मिलकर साथ चलेंगें ज्योत से ज्योत जलानी है।

आगे बढ़ते जाना है।

अभी तो छोटा बच्चा हूँ।

महानगरी के लोग

श्रीमती शालिनी दहिया, स.ले.प.अ.

नहीं अच्छे हैं ये महानगरी के लोग
सामने कुछ पीठ पीछे कुछ कहते हैं यहाँ के लोग
नहीं सुरक्षित बेटियाँ किसी की यहाँ
बेटियों का चरित्रहनन करते हैं खुद बेटियों वाले लोग

बचा कर रखना अपनी पवित्रता को
नहीं तो हर चौराहे पर बैठे हैं रावण सरीखे लोग
तुम्हें पता ही नहीं चलेगा इस चौंध चमक में
आबरू के सौदागर हैं ये कुलीन घरों वाले लोग

रात बिरात क्या डरोगी भूत पिशाच से
ये दिन उजाले में दानव सरीखे डरावने यहाँ के लोग
मन ना भाँप पाओगी इनका
मुँह पर सुंदर मुखौटे लगाये हुए हैं ये लोग

घर ऑफ़िस बस मेट्रो कहाँ तक बचोगी तुम
हर गली मुहल्ले कूचे में सैंध लगाये बैठे हैं ये लोग
जहां भनक लगे तुम डरना नहीं
मन के खोखले और नीच चरित्र के हैं ये लोग

जो दुर्गा सी बन गई तो पीछे हटेंगे
जो सीता सी झुकी तो आगे बढ़ेंगे
तो जब कोई आँख घुमाएँ टेढ़ी
महिषामर्दिनी सी बन जाना तुम
तब हीं डर पाएँगे विषधर सर्प सरीखे लोग।

छोड़ आए हो उन गलियों को

श्रीमती शालिनी दहिया, स.ले.प.अ.

पीछे छोड़ आए हो उन गलियों को,
जहाँ बचपन से ख़्वाब बुने थे,
जहाँ हर कोने में खुशियाँ
और हंसी के नग़मे बिखरे थे।

वो संकरी गलियाँ, वो धूप-छाँव,
वो पेड़ के नीचे छुप-छुपकर खेलना,
वो शामें गुज़ारना दोस्तों संग,
वो बेफिक्री में यूँ ही हँसना।

वो घरों की मुंडेरें, वो चौखटें,
जहाँ हर आहट थी जानी पहचानी,
वो आँगन में दौड़ती पायल की झंकार,
हर याद बनी है कहानी।

अब हैं नए रास्ते, नए शहर की भीड़,
पर दिल के एक कोने में बसते हैं,
वो बीते दिनों के सारे मंज़र,
जो याद बनकर बस साथ चलते हैं।

जाना ज़रूरी था, ये मंज़िल का रास्ता था,
पर उन गलियों का साया हरदम संग है,
चले गए दूर हम समय की दौड़ में,
पर वो गलियां अब भी दिल के करीब हैं।

समाचार पत्र: ज्ञान का सशक्त साधन

श्रीमती सुभा भारती,
पत्नी संदीप कु. बरनवाल, ले.प.

सवेरे-सवेरे घण्टी बजी। यही तो असली नाश्ता है, जी हाँ, चाय और अखबार। अगर पिताजी को सुबह-2 अखबार न मिला तो समझो उनका सुबह का समय बर्बाद हो गया। अखबार पढ़कर सब लोग यही जानना चाहते है, कि किस क्षेत्र में क्या घटना घटी और लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा। आस पड़ोस की खबर का तो पता चल ही जाता है परंतु हमारे देश में या दूसरे देशों में क्या हो रहा है, यह तो अखबार ही बता सकता है।

समाचार पत्र का इतिहास: अखबारों की रचना शायद लोगों को जागरूक बनाने के लिए की गई होगी। "जितने मुँह उतनी बाते" ऐसे में अफवाहे भी तो फैल सकती थी। पहले के जमाने में न ही टेलीविजन और न ही इंटरनेट था फिर अखबारों का छपने का कार्य प्रारंभ हुआ। आज के जमाने में हर जगह पत्रकार फैले हुए हैं। पत्रकार का काम होता है, खबरों को कार्यालय तक पहुँचना। संपादक मण्डल के संशोधन कार्य के पश्चात इनकी छपाई होती है, फिर अधिक से अधिक संख्या में इनकी बिक्री होती है।

क्या है खास: आज के जमाने में देश विदेश इतने विकसित होने के बाद भी समाचार पत्र करोड़ों की संख्या में रोजाना बिकते हैं। समाचार पत्र करोड़ों की संख्या में रोजाना बिकते है। 20-20 पन्ने के अखबार 400 से 500 रुपये में मिल जाते हैं। पहली बात तो यह है कि यह सामान्य जन के बजट में है। अखबारों में हर घटना की जानकारी काफी विस्तार में होती है। यह समय पर उपलब्ध भी होता है। विकास में यह पूर्णत: सहायक है। केवल हिन्दी, अंग्रेज़ी ही नहीं आज के जमाने में तो लगभग सभी भाषाओ में अखबार उपलब्ध है।

आज का अखबार: आज अखबारों में केवल खबर ही नहीं होती। इनमें हर वर्ग के लोगों के लिए कुछ न कुछ जरूरी चीजें होती है। देश की, विदेश की, खेल की, मनोरंजन की, पढ़ाई की, चटपटी सनसनी और सामाजिक हर प्रकार की खबरें होती है। इसके साथ-साथ हँसी-मज़ाक, साहित्यिक, धर्म आदि से जुडे लेख भी मौजूद है। सरकार पर आलोचनात्मक लेख और नीतियाँ भी होती है। बोर्ड परीक्षा हो या स्नातक की परीक्षा। उदाहरण के तौर पे कुछ प्रश्न अखबारों में आते हैं। सिनेमा और टेलीविज़न के कार्यक्रमों की सूची भी अब शामिल कर दी गई है। हॉलीवुड और बॉलीवुड के चर्चित अभिनेता-अभिनेत्रियों के साक्षात्कार भी आज-कल प्रकाशित किए जाते हैं। कुछ समाचार पत्रों में तो बच्चों के लिए मनोरंजन का एक अलग पन्ना होता है, जहाँ पर उनकी भेजी हुई चित्रकारिता और रचनायें प्रकाशित भी हो सकती है तथा इसके साथ-साथ विज्ञापन भी भरमार होते हैं। आज के जमाने में अखबार में चाहे उद्योग हो, या फिर शादी विवाह, या युवाओं की नौकरी संबंधी जानकारी का हल और तो और प्रतियोगिताएं गाने का रिंगटोन आदि सब की जानकारी भी मिल जाती है।

युवाओं का अखबार: वैसे तो आजकल के बच्चों को किताबों से नजर हटाने की ही फुर्सत नहीं है लेकिन अखबार उनके जीवन में सूर्य के प्रकाश की तरह है, ज्ञान राशि को बढ़ाता है। परीक्षाओं की तैयारी पर विशेषकों की खास राय भी मिलती है तथा तैयारी के लिए प्रश्नपत्र भी होते हैं। बड़े-बड़े कॉलेज वाले अपना विज्ञापन देते हैं, साथ ही साथ परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ अंक लाने वाले का साक्षात्कार प्रकाशित होता है, रोज़ाना अंग्रेज़ी अखबार पढ़ कर हम अच्छी अंग्रेज़ी बोलना सीख सकते है।

अंत में बस यही कहना चाहूँगी कि अखबारों ने हमारी दिन प्रतिदिन की दिनचर्या में इस प्रकार स्थान बना लिया है कि उन्हें अनदेखा करना असंभव है।

श्री हर्ष श्रीवास्तव, लेखापरीक्षक (टेबल टेनिस खिलड़ी) की इस वर्ष की उपलब्धियां

केन्द्रीय सिविल सेवा सॉंस्कृतिक एवं क्रीड़ा बोर्ड
Central Civil Services Cultural & Sports Board
कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग
Department of Personnel & Training
कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय
Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions
भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
INTER MINISTRY TABLE TENNIS
योग्यता प्रमाणपत्र
Certificate of Merit
YEAR 2023 - 2024

श्री / कुमारी / श्रीमती Shri/Kumari/Smt HARSH SHRIVASTAVA
Min/ Dept. AUDIT (TA & AD) प्रतियोगिता Event TEAM CHAMPIONSHIP
आयोजित held at J.L.N. STADIUM से from 3.10.2023 तक to 12.10.2023 भाग लिया
स्थान Position Ist

सचिव, सी सी एस सी एस बी
Secretary, C C S C S B

ALL INDIA CIVIL SERVICES TABLE TENNIS TOURNAMENT, 2023-24
Organised by
GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT
GOVERNMENT OF GUJARAT
Under the Auspices of Central Civil Services Cultural and Sports Board, NEW DELHI

Certificate of Merit

This is to Certify that Mr./~~Mrs./Miss~~ HARSH SRIVASTAVA of CCSCSB NEW DELHI Team is a member of Winner/~~Runner-up/2nd Runner-up~~ Team of All India Civil Services Table Tennis Tournament, 2023-24 held at Gandhinagar (Gujarat) from 10-03-24 to 14-03-2024.

(Satkar Desai)
Organising Secretary
A.I.C.S. Table Tennis Tournament &
Under Secretary, G.A.D., Government of Gujarat

14th March, 2024, Gandhinagar

(Jwalant Trivedi)
Chairman
A.I.C.S. Table Tennis Tournament &
Additional Secretary, G.A.D., Government of Gujarat

“सेवानिवृत्तियां”

इस वर्ष कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारीगण

क्रमांक	अधिकारी/कर्मचारीगण	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	गोविंद सिंह रावत	पर्यवेक्षक	30.09.2023
2.	अशोक कुमार शाह	व.ले.प.अ.	30.11.2023
3.	आशीष मित्रा	व.ले.प.अ.	31.12.2023
4.	सुरेन्द्र सिंह	व.ले.प.अ.	31.03.2024
5.	बृज लाल	व.ले.प.अ.	30.04.2024
6.	संगीता दुआ	व.ले.प.अ.	30.04.2024
7.	बसंती सोपोरी	व.ले.प.	31.07.2024
8.	महाप्रसाद अनुपम	व.ले.प.अ.	31.07.2024
9.	पंकज त्रेहन	व.ले.प.अ.	31.08.2024

HAPPY
INDEPENDENC